राजस्थान लोक सेवा आयोग
प्रारम्भिक परीक्षा
सामान्य ज्ञान और सामान्य विज्ञान

(राजस्थान का इतिहास, कला,संस्कृति, परम्परा एवं विरासत)

राजस्थान का प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास

इतिहास के स्त्रोत

'इतिहास', अतीत काल की घटनाओं का प्रमाणिक दस्तावेज है, जो इतिहासकार द्वारा लिखा गया है, अर्थात अतीत काल की घटनाओं को प्रत्यक्ष रूप से तो नही देखा जा सकता लेकिन कुछ 'साक्ष्य' या 'प्रमाण' ऐसे होते है, जो उसकी जानकारी देते है। 'साक्ष्य' स्वयं मे मूक होतें है, इतिहासकार उन्हें बुलवाता है। ये हमे कई रूपों में उपलब्ध होते है जैसे-स्मारक, सिक्के, अभिलेख, साहित्य तथा दस्तावेज आदि। राजस्थान के अत्यन्त प्राचीन काल के इतिहास को जानने के लिए केवल पुरातात्विक साक्ष्य ही उपलब्ध होते है, क्योकि तब मानव ने पढ़ना लिखना भी नहीं सीखा था। मध्यकाल मे इतिहास ज्ञात करने के अनेक साधन उपलब्ध हो जाते है। समय-समय पर आने वाले विदेशी यात्रियों ने भी अपनी दृष्टि से यात्रा संबंधी लेखन कार्य किया है। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व राजस्थान मे अनेक छोटी-बड़ी देशी रियासतें थी जिन्होने अपने स्तर पर अपने-अपने पूर्वजों का इतिहास संजोया था। इसलिए स्वतंत्रता से पूर्व राजस्थान का इतिहास इन्ही रियासतों का इतिहास है। इन सबके इतिहास को जोड़ कर देखा जाय तो राजस्थान का इतिहास दिखाई देता है। अत: राजस्थान के इतिहास के साधनों को हम अध्ययन मे सुविधा की दृष्टि से निम्नलिखित चार भागों मे विभक्त कर सकते है-

1. **पुरातात्विक स्त्रोत।**
2. **साहित्यिक स्त्रोत।**
3. **पुरालेख।**
4. **आधुनिक साहित्य।**

1. पुरातात्विक स्त्रोत

प्राचीन राजस्थान के इतिहास के निर्माण मे पुरातात्विक स्त्रोतों की अहम भूमिका है। पुरातत्व का अर्थ है भूतकाल के बचे हुए भौतिक अवशेषों के माध्यम से मानव के क्रियाकलापों का अध्ययन। ये अवशेष हमें अभिलेख, मुद्राएँ (सिक्के), मोहरे, भवन, स्मारक, मूतियाँ, उपकरण, मृदभाण्ड, आभूषण एवं अन्य रूपों में प्राप्त होते है। इतिहास की जानकारी के लिए पुरातात्विक स्त्रोतों का अधिक महत्व है, क्योकि साहित्यिक स्त्रोतों की तुलना मे इनसे प्राप्त जानकारी अधिक विश्वसनीय, प्रामाणिक एवं दोष रहित मानी जाती है। इसके दो कारण है। प्रथम, पुरातात्विक अवशेष समसामयिक एवं प्रामाणिक दस्तावेज होते है। द्वितीय, सहित्यिक स्त्रोतों की तुलना मे इनमें अतिरंजना का अभाव होता है तथा ये काल विशेष के दोषरहित एवं पारदर्शी दस्तावेज होते है। इन्हें पांच भागों मे विभक्त किया जा सकता है-

- **अभिलेख।**
- **मुद्राएं या सिक्के।**
- **स्मारक (दुर्ग, मंदिर, स्तूप, स्तंभ)।**
- **शैलचित्र कला।**
- **उत्खनित पुरावशेष (भवनावशेष, मृदभाण्ड उपकरण, आभूषण आदि।)**

अभिलेख

पुरातात्विक स्त्रोतों के अंतर्गत सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्त्रोत अभिलेख है। इसका मुख्य कारण उनका तिथियुक्त एवं समसामयिक होना है। ये प्राय: पाषाण: पट्टिकाओं, स्तंभों, शिलाओं ताम्रपत्रों, मूर्तियों आदि पर खुदे हुए मिलते है। ये अधिकांशत: महाजनी लिपि या हर्ष लिपि मे खोदे गये है। इनमें वंशावली क्रम तिथियाँ, विशेष घटना, विजय, दान आदि का विवरण उत्कीर्ण करवाया जाता रहा है। इनमें राजा महाराजाओं की उपाधियाँ उनके नाम के साथ लिखवायी गयी मिलती है, जिससे शासन स्वरूप की जानकारी मिलती है। स्पष्ट है, इन अभिलेखों मे शासक वर्ग की उपलब्धियाँ अंकित करवायी जाती थी। चित्तौड की प्राचीन स्थिति तथा **मोरी वंश** के इतिहास की जानकारी **'मानमोरी के अभिलेख'** से, जो 713 ई. (770 वि.स.) का है, प्राप्त होती है। 946 ई. (1003 वि.स.) के **'प्रतापगढ़ लेख'** से तत्कालीन **कृषि समाज एवं धर्म की जानकारी** मिलती है। 953 ई. (1010 वि.स.) के **'सांडेश्वर के अभिलेख'** से वराह मंदिर की व्यवस्था, स्थानीय व्यापार, कर, शासकीय पदाधिकारियों आदि के विषय मे पता चलता है। इसी तरह **बीसलदेव चतुर्थ** का **'हरिकेलि' नाटक** तथा उसी के राजकवि **सोमेश्वर** रचित **'ललित विग्रह नाटक'** शिलाओं पर लिखे है, जो चौहानो के इतिहास के प्रमुख स्त्रोत है। 1161 ई. (1218 वि.स.) के **कुमारपाल के लेख** मे **आबू के परमारों** की वंशावली प्रस्तुत की गयी है। 1169 ई. (1226 वि.स.) के **बिजोलिया शिलालेख** से चौहानों के समय की कृषि, धर्म तथा शिक्षा व्यवस्था पर प्रकाश पड़ता है। 1460 ई. (1517 वि.स.) की **'कीर्तिस्तंभ प्रशस्ति'** मे बप्पा, हम्मीर तथा कुंभा के विषय में विस्तृत जानकारी मिलती है। 1676 ई (1732 वि.स.) में मेवाड़ के महाराणा राजसिंह ने 'राज प्रशस्ति' लिखवाई। इसमें मेवाड़ का इतिहास व महाराणा की उपलब्धियो का वर्णन है।

इसी प्रकार गौरी द्वारा चौहानों की पराजय के पश्चात भारत मे तुर्क प्रभाव स्थापित हुआ, और उन्होने भी फारसी भाषा मे अनेक अभिलेख लिखवाये। अजमेर मे **ढ़ाई दिन के झोंपड़े का अभिलेख** 1200 ई. का **फारसी अभिलेख** है। ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह मे 1637 ई. का **शाहजहॉनी मस्जिद का अभिलेख** है, जिससे ज्ञात होता है कि शाहजादा खुर्रम ने मेवाड़ के महाराणा अमर सिंह को हराने के बाद यहां मस्ज़िद बनवायी थीं मुगलकाल में अजमेर, नागौर, रणथम्भोर, गागरोन, शाहबाद, चित्तौड़ आदि स्थानों पर फारसी अभिलेख खुदवाये। इन अभिलेखों मे हिज़री सम्वत् का प्रयोग है। अत: फारसी अभिलेख भी ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्त्रोत है।

राजस्थान के प्रमुख अभिलेख

नगरी का लेख (200 बी-सी-150 बी-सी)
- यह चित्तौड़गढ़ जिले के प्राचीनत नगर माध्यमिक या नगरी से प्राप्त शिलालेख है, जो जैन या बौद्धों से संबंधित है।
- यह बहुत छोटा शिलालेख है।

घोसुण्डी शिलालेख(चित्तौड़गढ)
- दूसरी सदी ई. पू. की संस्कृत भाषा की ब्राह्मी लिपि प्रयुक्त है।
- इसमें गजवंश के सर्वनाम द्वारा अश्वमेघ यज्ञ करने का उल्लेख (भागवत धर्म का प्रचार) मिलता हे।

बसन्तगढ़ का लेख,सिरोही (625ई.)
- यह कोटा के पास कणसवा गांव में स्थित है। इस अभिलेख में मौर्यवंशी राजा धवल का उल्लेख मिलता है।

कणसवा का लेख (738 ई.)
- यह कोटा के पास कणवसा गांव में स्थित है। इस अभिलेख में मौर्यवंशी राजा धवल का उल्लेख मिलता है।

घटियाला के शिलालेख (837 ई)
- जोधपुर जिले के गांव घटियाला के एक जैन मंदिर जिसे माता की साल कहते है जिससे गद्य पद्य संस्कृतभाषा में उत्कीर्ण की गयी है।

नाथ-प्रशस्ति-एकलिंग जी (971 ई.)
- यह उदयपुर के पास स्थित कैलाशपुरी(एकलिंग जी) के लकुलीश मंदिर में नरवाहनं के समय का संस्कृत भाषा व देवनागरी लिपि का अभिलेख है।

बिजोलिया का लेख (1170 ई.)
- भीलवाड़ा जिले के गांव बिजोलिया के पार्श्वनाथ मंदिर के पास जैन लोलाक ने मंदिर बनवाया जिसकी याद में उसने यह लेख उत्कीर्ण करवाया था।
- इसमें सांभर व अजमेर के चौहानों को वत्स गोत्रीय ब्राह्मण बताया गया।
- इसमें उस समय के भूमिदान के डोहली कहा गया है।
- रचयिता-गुणभ्रद।

जैन कीर्ति स्तम्भ लेख (13 वीं सदी)
- चित्तौड़ दुर्ग में स्थित रणकपुर के चौमुखा मंदिर (आदिनाथ मंदिर) में सस्कृत भाषा व नागरी लिपि में उत्कीर्ण। इसमें कुम्भा के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

विजय, स्तम्भ प्रशस्ति (1460 ई.)
- चित्तौड़गढ़ दुर्ग में स्थित विजय स्तम्भ पर उत्कीर्ण। इसका प्रशस्तिकार कवि अत्रि व उसका पुत्र महेश भट्ट था। इसमे बाण, हम्मीर मोकल का उल्लेख मिलता है। गणेश, शिव स्तुति मिलती है।
- इसमें कुम्भा द्वारा रचित ग्रन्थों, विरूदों (दानगुरू, राजगुरू,शैलगुरू) का उल्लेख तथा मालवा व गुजरात की सम्मिलित सेना को हराने का उल्लेख मिलता है।

कुम्भलगड़ शिलालेख (1460 ई.) :-
- यह लेख राजसमंद जिले के कुम्भलगढ़ दुर्ग में स्थित कुम्भस्यांम मंदिर (मामादेव का मदिर -वर्तमान नाम) में संस्कृत भाषा एवं नागरी लिपि में पांच शिलाओं पर उत्कीर्ण है।
- इसमें भौगोलिक स्थिति का, जनजीवन का, एकलिंग मंदिर का वर्णन, चित्तौड़ का वर्णन- (चित्रांग ताल, दुर्ग, वैष्णव तीर्थ के रूप में) किया गया है।
- इसमें मुख्यतया कुम्भा के विजयों का विस्तार से वर्णन मिलता है।
- इसका रचयिता कान्ह व्यास है। जबकि डॉ. गौरीशंकर हीराचन्द औझा के अनुसार इसका रचयिता महेश भट्ट है।

बीकानेर की प्रशस्ति (1594) :-
- बीकानेर दुर्ग में बीका से रायसिंह तक की उपलब्धियां, जूनागढ़ दुर्ग के निर्माण व कर्मचंद द्वारा निरीक्षण का वर्णन मिलता है।
- इसका रचयिता 'जइता' नामक जैन मुनि था।
- इसकी भाषा संस्कृत है।

जगन्नाथराय प्रशस्ति (1676) :-
- यह जगदीश मंदिर, उदयपुर में उत्कीर्ण है।
- इसमें बाप्पा से सांगा तक की उपलब्धियों का वर्णन है।
- यह मंदिर जगतसिंह प्रथम द्वारा बनाया गया।
- यह पंचायतन शैली का लेख है। जिसे अर्जुन की निगरानी में तथा सूत्रकार भाणा व उसके पुत्र मुकन्द की अध्यक्षता में बनवाया गया।

राजप्रशस्ति (1676) :-
- यह प्रशस्ति राजसंमद झील के तट पर नौ चौकी स्थान के ताकों में 27 काली पाषाण शिलाओं पर पद्य संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण है।
- इसका रचयिता तेलंग ब्राह्मण रणछोड़ भट्ट था।
- इस प्रशस्ति के उत्कीर्ण कर्ता गजधर मुकुन्दर, अर्जुन, सुखदेव, केशव, सुन्दरलालों, लखों आदि थें।
- मेवाड़ के शासकों की उपलब्धियों का वर्णन मिलता है।
- यह प्रशस्ति जगतसिंह प्रथम तथा राजसिंह के काल की उपलब्धियाँ जानने के लिए महत्वपूर्ण स्त्रोत है, यह विश्व की सबसे बड़ी पाषाण उत्कीर्ण प्रशस्ति है।

मुद्राएँ (सिक्के)

राजस्थान के प्राचीन इतिहास के लेखन मे मुद्राओं या सिक्कों से बड़ी सहायता मिली है, ये सोने, चांदी, ताम्बे और मिश्रित धातुओं के है। इन पर अनेक प्रकार के चिन्ह-त्रिशूल, छत्र, हाथी, घोड़े, चँवर, वृक्ष, देवी-देवताओं की आकृति, सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र आदि खुदे रहते है। तिथि-क्रम, शिल्प कौशल, आर्थिक स्थिति, राजाओं के नाम तथा उनकी धार्मिक अभिरूचि आदि पर ये प्रचुर प्रकाश डालते है। सिक्कों की उपलब्धता राज्य की सीमा निर्धारित करती है। राजस्थान के विभिन्न भागों में मालव, शिवि, यौधेय आदि जनपदों के सिक्के मिलते है। राजस्थान मे **रेढ** के उत्खनन से 3075 चांदी के **'पंचमार्क'** सिक्के मिले है। ये सिक्के भारत के प्राचीनतम सिक्के है। इन पर विशेष प्रकार के चिन्ह टंकित है और कोई लेख नही है। 10-11वीं शताब्दी मे प्रचलित सिक्कों पर **गधे के समान आकृति** का अंकन मिलता है, इन्हें **'गधिया सिक्के'** कहा जाता है। महारणा कुंभा के चांदी एवं ताम्बे के सिक्के मिलते है। मुगल शासन काल मे जयपुर में **'झाड़शाही'**, जोधपुर में **'विजयशाही'** सिक्कों का प्रचलन हुआ। ब्रिटिश शासन काल मे अंग्रेजों ने अपने शासक के नाम के चांदी के सिक्के ढ़लवाये।

राजस्थान के प्रमुख सिक्के

- झाड़शाही सिक्के	- जयपुर
- मुहम्मदशाही सिक्के	- जैसलमेर
- अखेशाही सिक्के	- जैसलमेर
- विजयशाही सिक्के	- जोधपुर
- भीमशाही सिक्के	- जोधपुर
- गजशाही सिक्के	- बीकानेर
- गुमानशाही सिक्के	- कोटा
- मदनशाही सिक्के	- झालावाड़
- स्वरूपशाही सिक्के	- उदयपुर
- चांदोड़ी सिक्के	- उदयपुर
- उदयशाही सिक्के	- डूंगरपुर
- तमचाशाही सिक्के	- धौलपुर

स्मारक (दुर्ग, मंदिर, स्तूप, स्तंभ)

राजस्थान मे अनेक स्थलों से प्राप्त भवन, दुर्ग, मंदिर, स्तूप, स्तम्भ आदि से तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है। हड़प्पा संस्कृति से संबंद्ध उत्तरी राजस्थान के हनुमानगढ़ जिल में कालीबांगा के पुरातात्विक उत्खनन मे अनेक भग्नावशेष प्राप्त हुए है, जिनसे तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक जीवन पर प्रकाश पड़ता है। राजस्थान दुर्गो के कारण प्रसिद्ध है। यहां अनेक भव्य एवं कलात्मक मंदिर है। विराटनगर मे बीजक पहाड़ी पर मौर्ययुगीन बौद्ध स्थापत्य के पुरावशेष, क्षेत्र मे बौद्ध केन्द्र का होना सिद्ध करते है। **हर्ष माता का मंदिर** (आभानेरी), **देव सोमनाथ का मंदिर** (सोम नदी के तट पर), **सास-बहु का मंदिर** (नागदा), **देलवाडा का मंदिर** (आबू) पुष्कर, चित्तौड़ एवं झालरापाटन के सूर्य मंदिर, किराडू और ओसियाँ के मंदिर बाडोली एवं दरा के मंदिर अपने समय की सभ्यता, धार्मिक विश्वास तथा शिल्प कौशल को अभिव्यक्त करते है।

राजस्थान की मध्ययुगीन इमारते, जिनमें भग्नावशेष, दुर्ग, राजप्रसाद आदि सम्मिलित है, से भी इतिहास विषयक जानकारी प्राप्त होती है। चितौडगढ़, कुम्भलगढ़, गागरोन, रणथम्भोर, आमेर, जालौर, जोधपुर, जैसलमेर, आदि दुर्ग सुरक्षा व्यवस्था पर ही प्रकाश नही डालते बल्कि उस समय के राजपरिवार तथा जन साधारण के जीवन, स्तर को भी अभिव्यक्त करते है।

शैलचित्रकला

प्रागैतिहासिक काल में मानव पर्वतों की गुफाओं, नदियों की कगारों तथा चट्टानों, शिलाखण्डों द्वारा बने आश्रय स्थलों मे शरण लेता था। ये स्थल उसके आवास स्वरूप थे। नैसर्गिक रूप से बनी इन पर्वतीय संरचनाओं को 'शैलाश्रय' कहा जाता है। राजस्थान की अरावली पर्वत श्रृंखला मे तथा चम्बल नदी घाटी मे नदी कगारों के रूप मे बहुत से ऐसे शैलाश्रय प्राप्त हुए है जिनमें प्रागैतिहासिक काल के मानव द्वारा प्रयोग मे लिये गये पाषाण उपकरण, अस्थि अवशेष एवं अन्य पुरासामग्री प्राप्त हुई है। इन शैलाश्रयों की छत, भित्ति, कभी-कभी फर्श आदि पर इस प्रकार की कलाकृतियाँ दिखाई देती है, जो रंगों द्वारा या कठोर उपकरणों द्वारा कुरेद-कुरेद कर बनायी गयी है, इन्हें Rock Art तथा चित्रांकन को 'शैलचित्र' कहते है। ये शैलचित्र तत्कालीन मानव द्वारा विभिन्न प्रकार के रंगों मे बनाये गये है। सामान्यत: आसानी से उपलब्ध गेरू के द्वारा लाल रंग के बने चित्र प्राप्त होते है। गेरू या 'हेमेटाइट' (लौह खनिज) के टुकडे को घिसने पर लाल रंग का चूर्ण बन जाता है, उसके द्वारा तत्कालीन मानव ने शैलाश्रयों की दीवारों पर विभिन्न प्रकार के दृश्यों का बहुत अच्छे ढंग से चित्रांकन किया है। इनमें सर्वाधिक आखेट दृश्य उपलब्ध होते है, जिनमें तत्कालीन आखेटक जीवन के विभिन्न पक्ष जैसे उपकरणों के प्रयोग की विधियाँ, उनके प्रकार, जीव जन्तुओं की प्रजातियाँ तथा तत्संबंधी पर्यावरण आदि की विशद् जानकारी प्राप्त होती है। अर्थात शैलाश्रयों मे किया गया चित्रांकन तत्कालीन मानव द्वारा निर्मित उसके अभिलेखीय साक्ष्य है। चित्रित शैलाश्रयों की दृष्टि से चम्बल नदी घाटी का क्षेत्र उल्लेखनीय है। यहां कन्यादय, रावतभाटा, अलनियाँ, दरा आदि स्थलों मे अनेक चित्रित शैलाश्रय प्रकाश मे आये है। **बूंदी जिले मे छाजा नदी** इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। इस क्षेत्र मे ओमप्रकाश शर्मा द्वार शताधिक महत्वपूर्ण चित्रित शैलाश्रय प्रकाश मे लाये गये है। विराटनगर (जयपुर), सोहनपुरा (सीकर) तथा हरसौरा, डडीकर (अलवर) भी अनेक चित्रित शैलाश्रय प्राप्त हुए है।

उत्खनित पुरावशेष (भग्नावशेष, मृद्भाण्ड, उपकरण, आभूषण आदि)

अन्वेषण एवं उत्खनन में प्राचीन काल की सामग्री उपलब्ध होती रहती है, जैसे- पाषाण उपकरण, मृद्भाण्ड, धातु उपकरण, अस्त्र-शस्त्र, बर्तन आभूषण आदि। लेकिन मृद्भाण्डो की उपलब्धि सर्वाधिक है जिनको उनकी गठन, बनावट तथा तकनीक के आधार पर चार सांस्कृतिक वर्गो मे विभाजित किया जाता है, जो निम्नानुसार है-

- गेरूए रंग मृद्भाण्ड संस्कृति (OCP)।
- काले एवं लाल रंग की मृद्भाण्ड संस्कृति (B&R)।
- चित्रित सलेटी रंग की मृद्भाण्ड संस्कृति (PGW)।
- उत्तरी-काली चमकीली मृद्भाण्ड संस्कृति (PBP)।

मृदभाण्डों की भाति, प्राचीन काल के पाषाण एवं धातु उपकरणों की सहायता से संस्कृतियों के विकास-क्रम को समझने मे सहायता मिलती है।

2. साहित्यिक स्त्रोत

साहित्य समाज का दर्पण होता है। ग्रंथ, चाहे वह धर्म से संबंधित हो, एतिहासिक हो या लौकिक हो, उसमें अपने रचना काल की प्रवृत्तियाँ समाविष्ट रहती है। इसलिए इतिहास की दृष्टि से ये महत्वपूर्ण स्त्रोत है। राजस्थान मे साहित्य का सृजन संस्कृत, राजस्थानी, हिन्दी एवं फारसी भाषा में किया गया है। अनेक राजा महाराजाओं ने अपने दरबार मे विद्वान कवियों एवं साहित्यकारों को आश्रय दिया है। उनकी कृतियाँ इतिहास के प्रमुख स्त्रोत है। लेकिन दरबारी लेखन अतिशयोक्तिपूर्ण विवरण की पूरी संभावना रहती है, जिसकी पुष्टि इतिहासकार अन्यत्र किये गये स्वतंत्र लेखन से करते है।

संस्कृत साहित्य

12वीं शताब्दी मे **जयानक** ने **'पृथ्वीराज विजय'** की रचना की। इसमें सपादलक्ष में चौहानो के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। **जयचन्द सूरि** द्वारा रचित **'हम्मीर महाकाव्य'** रणथम्भोर के चौहान वंश की जानकारी का स्त्रोत है। **चन्द्रशेखर** कृत **'सुर्जन चरित'** समाज जीवन के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी देता है। मेवाड़ की शिल्पी मण्डन द्वारा रचित 'राजबल्लभ' में महाराणा कुंभा के काल की जानकारी मिलती है। इसके अतिरिक्त मेरूतुंग रचित **'प्रबंध चिंतामणि'**, **राजशेखर** कृत **'प्रबंध कोष'**, **रणछोड भट्ट** द्वारा रचित **'अमर काव्य वंशावली'** आदि महत्वपूर्ण ग्रंथ है।

राजस्थानी एवं हिन्दी साहित्य

राजस्थानी भाषा मे भी अनेक ग्रंथों की रचना हुई जिनका इतिहास लेखन हेतु स्त्रोत के रूप में उपयोग किया जाता है, जैसे **'पृथ्वीराज रासो'** की काव्य रचना **चन्दरबरदाई** ने की। इसमें पृथ्वीराज चौहान तथा मुहम्मद गौरी के मध्य युद्ध का वर्णन है। हम्मीर की उपलब्धियों का उल्लेख विजयसा कृत 'हमीर **देव चौसाई'**, **जोधराज** कृत **'हम्मीर रासों'**, **चन्द्रशेखर** कृत **'हम्मीर हठ'**, तथा राजरूप रचित **'हम्मीर राछाड़ा'** मे मिलता है।

जालौर के शासक **कान्हड़ दे** के समय रचित **'कान्हड़ दे प्रबंध'** एक महत्वपूर्ण कृति है। इसकी रचना **पद्मानाभ** ने की। **करणीदान** द्वारा रचित **'सूरज प्रकाश'** ग्रन्थ मे जोधपुर नरेश अजय सिंह के शासन काल की महत्वपूर्ण घटनाओं का विवरण है।

ख्यात सहित्य

ऐसा साहित्य जो 'ख्याति' को प्रतिपादित करे, यह ख्यात साहित्य कहलाता है। ख्यातों का विस्तृत रूप 16वीं शताब्दी के अंत से मिलता है। ये राजस्थानी भाषा मे गद्य मे लिखा गया साहित्य है। अधिकांशत: ख्यात लेखक दरबार के चारण या भाट होते थे किन्तु **मुहणोत नैणसी** इसके अपवाद है। **'मुहणोत नैणसी री ख्यात'**, **'बांकीदास री ख्यात'**, **'दयालदास री ख्यात'**, **'राजा मानसिंह जी ख्यात'** और इसी तरह फलौदी, सांचौर, जैसलमेर तथा किशनगढ़ री ख्यात उल्लेखनीय है।

इसके अतिरिक्त राजस्थानी भाषा में रचित **'अचलदास खींची री वचनिका'** गागरोन के खींची शासको की जानकारी का स्त्रोत है। महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण कृत **'वंश भास्कर'** एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथ है, जो मराठों के आक्रमणों के विषय में जानकारी उपलब्ध करवाता है।

फारसी साहित्य

मध्ययुगीन राजस्थान की घटनाओं की जानकारी का महत्वपूर्ण स्त्रोत उर्दू तथा फारसी साहित्य है। इसके लेखक दिल्ली के सुल्तान या मुगलों के संरक्षण मे ग्रंथों की रचना करते थे। अत: अतिश्योक्ति पूर्ण विवरण भी इनकी रचनाओं मे उपलब्ध होता है जिनका उपयोग करते समय सावधानी की आवश्यकता है।

'चचनामा' मे सिन्ध प्रदेश मे अरबी आक्रमण का वर्णन है। **'तबकाते नासिरी'** मे **मिनहाज सिराज** ने 1260 ई. तक के सुल्तानो के विषय मे लिखा है। **'ताज उल मासिर'** मे हसन निजामी ने राजस्थान में मुस्लिम सत्ता की स्थापना का उल्लेख किया है।

'खजाइन-उन-फुतूह' मे **अमीर खुसरों** ने अलाउद्दीन खिलजी के विजय अभियानों का आंखों देखा विवरण लिपिबद्ध किया है।

'तारीख-ए-फिरोजशाही' मे **जियाउद्दीन** बरनी ने खिलजी एवं तुगलक सुल्तानों का वर्णन किया है। **'तारीख-ए-मुबारकशाही'** मे **याहया बिन अहमद अब्दुलशाह सरहिन्दी** ने चम्बल क्षेत्र के अनेक मार्गो की जानकारी के साथ **मुबारकशाह खिलजी** द्वारा मेवात क्षेत्र मे किये गये आक्रमण का उल्लेख किया है।

'तुजुक-ए-बाबरी' मे बाबर ने मेवाड़ के राणा सांगा के साथ संबंधों का विवरण लिखा है। हुमायूं की बहिन **गुलबदन** बेगम द्वारा रचित **'हुमायूँनामा'** मे तथा **जौहर आफताबची** द्वारा रचित **'तज किराते-उल-वाकियात'** मे मारवाड़ के मालदेव तथा जैसलमेर के भाटी मालदेव का वर्णन किया **अब्बास सरवानी** ने **'तारीखे शेरशाही'** मे शेरशाह के राजस्थान अभियान का विस्तृत विवरण दिया है।

अकबर कालीन इतिहासकारो मे **अबुल फजल** ने **'अकबरनामा'** मे, **बदायूँनी** ने **'मुन्तख्वाबत-उत्-तवारीख'** में, **फरिश्ता** ने **'तारीख-ए-फरिश्ता'** में राजस्थान की अनेक घटनाओं का वर्णन किया है। **जहाँगीर** ने अपनी आत्मकथा **'तुजुके-जहाँगीरी'** में अपने निकट संबंधी शासको का वर्णन किया है।

3. पुरालेख

लिखित दस्तावेज 'पुरालेख' कहलाते है। 16वीं शताब्दी मे राजस्थान के सभी शासकों के पास ऐसे अधिकारी दिखाई देते है, जो राजकीय कागज-पत्रों को संभाल कर रखने का काम करते है। इनमें विभिन्न राजा महाराजाओ से प्राप्त पत्र तथा उनके प्रेषित पत्रों की प्रतियाँ, भूमि विषयक कार्यवाही, राजस्व संबंधी विवरण, यहां तक कि दरबार की कार्यवाही का रिकार्ड भी संभाल कर रखा जाने लगा।

राजपूत घरानों मे भी रिकार्ड रखने की प्रथा प्रचलित थी। यहां बहियाँ लिखी जाती थी। ये एक तरह की फाइल थी। प्रत्येक विषय की बही अलग-अलग होती थी जैसे- विवाह री बही, हकीकत री बही, हुकूमत री बही अर्थात जिसमें सरकारी आदेशो की नकल होती थी, पट्टा बही, परवाना बही आदि इसके अतिरिक्त 'अडसट्टा रिकार्ड' है जिसमे भूमि की किस्म, किसान का नाम, भूमि के माप, फसलो का विवरण, लगान का हिसाब आदि का विवरण उपलब्ध होता है। कुछ बहियाँ व्यापारियों की भी है जिनमें वस्तुओं का बाजार भाव, मण्डियो के नाम, वस्तुओं का उल्लेख जो बाजार मे बिकने आती थी का उल्लेख मिलता है। इस प्रकार इतिहास को जानने के लिए पुरालेख अत्यन्त महत्वपूर्ण साधन है। ये सब रिकॉर्ड विभिन्न अभिलेखागारो में संग्रहित है। हमारे राज्य का प्रमुख अभिलेखागार बीकानेर मे स्थित है।

4. आधुनिक साहित्य

राजस्थान के इतिहास का लेखन 19वीं शताब्दी के शुरू मे कर्नल टॉड ने किया है। टॉड द्वारा रचित **'एनल्स एण्ड एन्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान'** राजस्थान के इतिहास की महत्वपूर्ण कृति है। टॉड ने प्राचीन ग्रंथों, शिलालेखों, दानपत्रों, सिक्कों, ख्यातो और वंशावली संग्रह के आधार पर अपने ग्रंथ की रचना की। टॉड ने उस समय उपलब्ध सभी साधनों का प्रयोग करके यह ग्रंथ लिखा लेकिन फिर अनेक नवीन स्त्रोत सामने आये है। वह एक विदेशी था, शासक वर्ग से संबंधित था अतः उसकी सीमाएं थी। वह भारतीय भाषा रीति-रिवाज आदि को ठीक से नही समझ सका और हो सकता है कि उपलब्ध साहित्यिक साक्ष्य उसे मिल न सके हो। परवर्ती काल मे **गौरीशंकर हीराचनद** ओझा ने राजस्थान के इतिहास पर नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। ओझा के इस प्रयत्न ने राजस्थान इतिहास लेखन की परम्परा प्रारम्भ की। इनके पश्चात श्यामलदास, जगदीश सिंह गहलोत तथा डॉ. दशरथ शर्मा ने राजस्थान के इतिहास विषयक ग्रंथों की रचना की। राजस्थान के इतिहास के लेखकों में डॉ. गोपीनाथ शर्मा का नाम भी उल्लेखनीय है। आधुनिक राजस्थान के लेखन मे डॉ. एम.एस. जैन का योगदान भी महत्वपूर्ण है। राजस्थान के इतिहास के प्रमुख लेखक-

मुहणोत नैणसी

इनकी इतिहास विषयक घटनाओ मे बचपन से ही रूचि थी। चारण भाटो से प्राप्त जानकारी को ये लिपिबद्ध कर लेते थे। मुहणोत नैणसी का जन्म **ओसवाल वैश्यो** की मुहणोत शाखा में 1610 ई. मे हुआ। इनके पिता जयमल एवं माता स्वरूप देवी थी। मुंहणोत घराना कई पीढ़ियों से मारवाड़ राजघराने की सेवा मे काम करता आया था। युवावस्था मे नैणसी को भी राज्य की सेवा में नियुक्त कर लिया गया। 1657-58 ई. मे नैणसी की सैनिक एवं राजनीतिक योग्यता को देखकर महाराजा जसवन्त सिंह ने उसे अपना दीवान नियुक्त किया। उन्होने दस वर्ष तक राज्य की सेवा की। जब औरंगजेब ने महाराजा जसवन्त सिंह को शिवाजी का दमन करने के लिए औरंगाबाद भेजा तो वे अपने साथ नैणसी तथा उसके भाई सुन्दरदास को भी लेते गये। वहां महाराजा जसवन्त सिंह उनसे नाराज हो गये तथा दोनों भाईयो को बन्दी बना लिया गया तथा अन्त में उन्हें जोधपुर भेजते समय मरवा दिया गया। यह विस्मय जनक घटना है।

नैणसी ने दो महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखे है-

1. **मुहतो नैणसी री ख्यात।**
2. **मारवाड़ रा परगना री विगत।**

कर्नल जेम्स टॉड

20 मार्च 1782 ई. को इंग्लैण्ड मे जन्मे टॉड 1798 ई. में इण्डिया कम्पनी मे एक सैनिक रंगरूट बनकर भारत आया। उसने 1801 ई. में उसने दिल्ली के निकट एक पुरानी नहर की पैमाइश का काम किया तथा 1805 ई. में वह दौलतराव सिंधिया के दरबार मे एक सैनिक टुकड़ी मे नियुक्त किया। 1817 से 1822 ई. के मध्य टॉड को पश्चिमी राजपूत राज्यों मे ईस्ट इण्डिया कम्पनी का पॉलिटीकल एजेन्ट बनाकर भेजा गया। इस अवधि मे टॉड ने वहां की इतिहास विषयक जानकारी एकत्र की। उसे राजपूत शासकों से इतना अधिक लगाव हो गया था कि उसके अधिकारियो को भी उसकी स्वामी भक्ति पर संदेह उत्पन्न हो गया। उसे 1822 ई. में स्वास्थ्य के आधार पर त्यागपत्र देना पड़ा। तत्पश्चात टॉड इंग्लैण्ड चला गया और 1829 ई. मे उसके प्रसिद्ध ग्रंथ ''एनल्स'' का प्रथम खण्ड तथा 1832 ई. मे द्वितीय खण्ड प्रकाशित हुआ। ''पश्चिमी भारत की यात्रा'' नामक ग्रंथ उसकी मृत्यु (1835 ई.) के पश्चात 1839 ई. में प्रकाशित हुआ।

टॉड द्वारा रचित 'एनल्स' राजस्थान के राजपूतों के विषय में विश्वकोष है। एनल्स के प्रथम खण्ड में राजपूताने की भौगोलिक स्थिति, राजपूतों की वंशावली, सामन्ती व्यवस्था और वीर भूमि मेवाड़ का इतिहास है। द्वितीय खण्ड में मारवाड़ बीकानेर, जैसलमेर, आमेर और हाड़ौती के राज्य का इतिहास है। 'पश्चिमी भारत की यात्रा' नामक ग्रंथ मे भ्रमण करते समय व्यक्तिगत अनुभवों के साथ-साथ राजपूती परम्पराओं, अन्धविश्वासों, आदिवासियों के जीवन मंदिरों, मूर्तियों, पण्डे-पुजारियों और अन्हिनलवाड़ा, अहमदाबाद तथा बड़ौदा का इतिहास लिखा

है। एक विदेशी होते हुए उसने राजपूती समाज के विषय में विस्तृत विवरण दिया है। टॉड की मान्यता ने कि **''राजस्थान मे कोई छोटा सा राज्य भी ऐसा नही है जिसमें थर्मोपोली जैसी रणभूमि न हो और शायद ही कोई ऐसा नगर मिले जहां लियोनिडस जैसा वीर पुरूष पैदा न हुआ हो।''**

टॉड का ग्रन्थ इतना महत्वपूर्ण होते हुए भी दोष युक्त है। उसने राजपूत जाति के विषय में अपूर्ण विवरण दिया है। यह वैज्ञानिक पद्धति द्वारा लिखा ग्रंथ नही है। संभवत: राजस्थान के इतिहास से संबंधित टॉड को इतनी सामग्री उपलब्ध नही हो पायी थी, जितनी वर्तमान मे उपलब्ध है। वह संस्कृत, प्राकृत, अरबी, फारसी भाषाओ का जानकार भी नहीं था। उस समय वह अनुवादकों पर निर्भर था। अनुवादकों की त्रुटियों का समावेश भी उसके लेखन को दोषपूर्ण बनाता है।

कविराजा श्यामलदास

महामहोपाध्याय कविराजा श्यालदास का जन्म मेवाड़ के ढोकलिया गांव में 1838 ई. मे हुआ। इन्हें मेवाड के महाराणा शम्भूसिंह ने राज्य का इतिहास लेखन का दायित्व सौंपा। इस हेतु महाराणा ने एक पृथक विभाग स्थापित किया तथा दो अन्य सहायकों की नियुक्ति की। इस विभाग मे उपलब्ध ऐतिहासिक सामग्री की सहायता से श्यामलदास ने 1871 ई. में 'वीर विनोद' ग्रंथ लिखना प्रारम्भ किया, जो 1886 ई. के आसपास छपकर तैयार हुआ। दो खण्डो मे उपलब्ध 'वीर विनोद' 2684 पृष्ठो का विशाल ग्रंथ है जिसे लिखने मे 15 वर्ष लगे। 'वीर-विनोद' मुख्य रूप से उदयपुर राज्य का इतिहास है। लेकिन इसमें प्रसंगवश उन राज्यों का भी इतिहास है जो किसी न किसी प्रकार से उदयपुर से संबंधित हुए, इस प्रकार से यह ग्रंथ राजस्थान का संपूर्ण इतिहास है। महाराणा ने इन्हें **'कविराजा'** की उपाधि प्रदान की।

महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण

सूर्यमल्ल मिश्रण का जन्म 1815 ई. मे पिता चण्डीदान एवं माता भवानी बाई के घर में हुआ। चण्डीदान बून्दी नरेश महाराव रामसिंह के आश्रित कवि थे। अपने पिता के पश्चात सूर्यमल्ल ने महाराव रामसिंह के दरबार मे कवि के रूप में प्रसिद्धि पाई। उन्होने **'वंश भास्कर', 'वीर सतसई', 'बलवद्धिलास', 'छंदोभ मूल', 'सती रासों'** आदि ग्रंथों की रचना की। महाराव की आज्ञानुसार 1840 ई. मे 'वंश भास्कर' लिखना प्रारम्भ किया लेकिन किन्ही कारणों से 1856 ई. में लेखन कार्य बंद कर देना पड़ा।

तत्पश्चात उनके दत्तक पुत्र मुरारीदान ने इस ग्रंथ को पूर्ण किया। यह मूल ग्रंथ 2500 पृष्ठो का है। सूर्यमल्ल मिश्रण ने बूंदी का **इतिहास लेखन** प्रारंभ किया था लेकिन वंश भास्कर मे राजपूताने का ही नहीं अपितु उत्तरी भारत का संपूर्ण इतिहास समाया हुआ है। राजनैतिक इतिहास के साथ-साथ वंश भास्कर मे सामाजिक और सांस्कृतिक विवरण भी विस्तर पूर्वक उल्लेखित है।

गौरीशंकर हीराचन्द ओझा

इनका जन्म 1863 ई. में सिरोठी राज्य के रोहिड़ा ग्राम में हुआ था। ये बंबई से हाई स्कूल की परीक्षा पास कर उदयपुर मे बस गये। उदयपुर मे अंग्रेजी रेजीडेन्ट ने इन्हें एक संग्रहालय के निर्माण का कार्य सौंपा। इसके पश्चात वे अजमेर मे राजस्थान के रेजीडेन्ट अर्सकीन के संपर्क मे आये। अर्सकीन ने 1908 में उन्हें अजमेर बुलाकर **राजस्थान म्यूजियम का क्यूरेटर** बना दिया। ओझा जी ने 30 वर्ष तक इस पद पर कार्य किया।

ओझा जी द्वारा रचित **''सिरोही राज्य का इतिहास''** 1911 ई. में प्रकाशित हुआ। इसके बाद उन्होने उदयपुर, डूँगरपुर, बांसवाड़ा तथा प्रतापगढ़ के **गुहिल-सिसोदिया राज्यों का इतिहास** लिखा। इसके पश्चात **'बीकानेर राज्य का इतिहास'** लिखा। फिर उन्होने 'जोधपुर राज्य का इतिहास लिखना प्रारम्भ किया, जिसकी दो जिल्द ही प्रकाशित हो पायी। यद्यपि इसके द्वारा राजस्थान के संपूर्ण राज्यों के इतिहास ग्रंथ नही लिखे गये लेकिन इन्हें **पूर्ण राजस्थान का इतिहासकार** कहा जा सकता है। ओझा जी **पुरातत्ववेता** थे। उन्हें लिपिमाला तथा स्थापत्य कला की विशेष जानकारी थी। उन्होने अपने ग्रंथों के लेखन मे पुरासामग्री का भरपूर प्रयोग किया है।

विविध अंचल

वर्तमानकाल मे हम जिसे राजस्थान राज्य कह कर पुकारते है, उसके पहले अलग-अलग भागो के अलग-अलग नाम थे। यही नही अलग-अलग कालों जैसें प्राचीन एवं मध्यकाल मे भी उनके अलग-अलग नाम थे।

- **जांगल देश**- वर्तमान जोधपुर एवं बीकानेर का क्षेत्र महाभारत काल में **'जांगल देश'** कहलाता था। कभी-कभी इसका नाम **'कुरू जांगला'** और **'माद्रेय जांगला'** भी उल्लेखित मिलता है। इसकी राजधानी **'अहिच्छत्रपुर'** भी जिसे वर्तमान मे हम नागौर कहते है। बीकानेर के राजा इस जांगल देश के स्वामी थे इसीलिए उन्होने अपने आपको **'जांगलधर बादशाह'** कहा है। बीकानेर राज्य के राज्य चिन्ह मे **'जय जांगलधर बादशाह'** लिखा मिला है।
- **मत्स्य देश**-अलवर एवं जयपुर तथा भरतपुर का कुछ भाग 'मत्स्य' देश का क्षेत्र था। इसकी राजधानी **विराटनगर** (आधुनिक बैराठ) थी। महाभारत काल में यह राज्य राजनीतिक गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण केन्द्र रहा है।
- **शूरसेन**-भरतपुर, धौरपुर तथा करौली का क्षेत्र 'शूरसेन' राज्य के अंतर्गत था जिसकी राजधानी 'मथुरा' थी।
- **अर्बुद देश-सिरोही** के आस-पास के क्षेत्र की गणना **'अर्बुद देश'** मे की जाती थी।
- **अर्जुनायन**-शंग-कण्व काल मे अलवर, भरतपुर, आगरा एवं मथुरा का भू-भाग 'अर्जुनायन' राज्य कहलाता था। इस क्षेत्र मे **'अर्जुनायना जय:'** अंकित सिक्के प्राप्त हुए है।
- **शिवि**-चित्तौड़ का क्षेत्र 'शिवि' राज्य कहलाता था। इसकी राजधानी 'मध्यमिका' थी। जिसे वर्तमान मे 'नगरी' कहा जाता है। यह चित्तौड़ से 12 कि.मी. उत्तर मे स्थित है। महाभारत काल में उशीनर द्वारा शिवि राज्य शासित था।
- **मेदापाट (मेवाड़)**-परवर्ती काल में जयपुर-चित्तौड़ के शासको को म्लेच्छों से निरंतर संघर्ष करना पड़ा, इसलिए इन्हें **'म्लेच्छों को मारने वाला'** अर्थात **'मेद'** कहा जाने लगा तथा उनके क्षेत्र को **'मेदपाट'** जिसे **'मेवाड़'** कहा जाता है। वर्तमान काल मे उदयपुर, राजसमन्द, चित्तौड़, भीलवाड़ा, बांसवाड़ा और डूँगरपुर जिले का क्षेत्र मेवाड़ क्षेत्र कहलाता है। यहाँ का गौरवपूर्ण इतिहास भारत को विश्व मे प्रतिष्ठापित करता है।
- **मारवाड़**-इसे प्रारम्भ में **'मरू'** और फिर **'मरूवार'** और अन्त में **'मारवाड़'** कहा जाने लगा।
- **गुर्जरत्रा**-जोधपुर के दक्षिणी भाग को **'गुर्जरत्रा'** कहते थे।
- **माड**-जैसलमेर राज्य को पूर्वकाल मे **'माड'** कहा जाता था।
- **संपादलक्ष**-जांगल देश के पूर्वी भाग को 'सपादलक्ष' कहते थे। सपादलक्ष क्षेत्र पर चौहान शासकों का राज्य स्थापित हुआ

और ये **'सपादलक्षीय नृपति'** कहलाने लगे। जब इनका राज्य विस्तार हुआ तो राजधानी **'शाकम्भरी' (सांभर)** हो गयी और वे **'शाकम्भरीश्वर'** कहे जाने लगे। जब इनकी राजधानी अजमेर हुई, तक इनके राज्य मे मेवाड़ मारवाड़ बीकानेर और दिल्ली का प्रदेश सम्मिलित थे।

- **हाड़ौती**-कोटा एवं बूंदी जिलो का क्षेत्र 'हाडौती' कहलाता है। झालावाड जिले का भू-भाग **'मालवा'** देश के अंतर्गत था।
- **ढूंढाड**-जयपुर के आस-पास का क्षेत्र 'ढूँढाड़' कहलाता है। इस प्रकार जिस भू-भाग को आजकल हम राजस्थान कहते है, उसके विभिन्न भागों के अलग-अलग नाम रहे है।

राजस्थान के विभिन्न नगरों के प्राचीन नाम

वर्तमान नाम	-	प्राचीन नाम
तारागढ़	-	गढ बीठली
सिरोही	-	शिवपुरी
बून्दी	-	वृन्दावली
ऋषभदेव	-	धूलैव
आमेर	-	अम्बावली
मेवाड़	-	मेदपाट, प्राग्वट
नगरी	-	मध्यमिका
जैसलमेर प्रदेश	-	मांड प्रदेश
मारवाड़	-	मरूवार, मरूप्रदेश
नाडोल	-	नाडुल्य
प्रतापगढ़	-	देवलिया
केशोरायपाटन	-	पाटन
ओसियां	-	उपकेशपटन
झालावाड़	-	चन्द्रावती
मेड़ता	-	मेदान्तक
कामां	-	काम्यवन
गंगानगर	-	रामनगर
आबू	-	अर्बुद
महावीर जी	-	चॉन्दनपुर
रामदेवरा	-	रूणेचा
करौली	-	गोपालपाल, कल्याणकारी
धौलपुर	-	कोठी
झालरापाटन	-	बृजनगर, चन्द्रावती नगर
अलवर	-	अलौर, साल्वपुर
भीनमाल	-	श्रीमाल
बयाना	-	श्रीपंथ,भादानक
सांचौर	-	सत्यपुर
जालौर	-	जाबालिपुर
नागौर	-	नागदुर्ग, अहिच्छत्रपुर
जयसंमद	-	ढ़ेबर
चित्तौड़गढ़	-	चित्रकूट
अजमेर	-	अजयमेरू
हनुमानगढ़	-	भटनेर
नाथद्वारा	-	सिंघाड़
विजयनगर	-	बिजोलिया
बैराठ	-	विराटनगर, विराटपुर
धौलपुर	-	कोठी
मंडोर	-	माण्डव्यपुर

सभ्यता एवं पुरातात्विक स्थल

विश्व की प्राचीनतम अरावली की कंदराओं में मानव आश्रय का प्रमाण सर्वप्रथम भू-वैज्ञानिक **सी.ए. हैकट** ने 1870 ई. में **इन्द्रगढ़ (बूंदी)** में खोज निकाला। ऋग्वैद मे सरस्वती नदी एवं मरू दोनों का उल्लेख है। पाणिनी की अष्टाध्यायी में यूनानी आक्रमण के समय **शिवि जनपद** व उसकी राजधानी **माध्यमिका** का उल्लेख मिलता है। राजस्थान में आर्य सभ्यता के प्रमाण अनूपगढ़ (गंगानगर) तथा तरखानवाला डेरा (गंगानगर) खुदाई में प्राप्त मिट्टी के बर्तनों से मिलता है। रामायण में राजस्थान के लिए **मरूकान्तार** शब्द का उल्लेख मिलता है।

कालीबंगा (हनुमानगढ़)

- नदी- सरस्वती (घग्घर)
- कालीबंगा का शाब्दिक अर्थ काली चूड़ियां है।
- **सर्वप्रथम** इसकी खुदाई 1952 ई. में **अमलानन्द घोष** द्वारा तथा 1961-1969 में ब्रजवासी लाल (बी.वी.लाल) व बालकृष्ण थापर (बी.के. थापर) द्वारा की गयी।
- यह सैन्धव सभ्यता से भी प्राचीन-प्राक् हड़प्पा युगीन संस्कृति स्थल है।
- यह विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं के समकक्ष है।
- इसकी नगर योजना सिन्धु घाटी की नगर योजना के समान थी।
- यहाँ पर से मकानों से पानी निकालने के लिए लकड़ी की नालियों का प्रयोग किया जाता था।

आहड़ (उदयपुर)

- यह सभ्यता आहड़ (बेहड़) नदी के तट पर स्थित है, जो बनास की सहायक नदी बेड़च भी कहलाती हैं।
- इसका स्थानीय नाम धूलकोट था।
- 10-11 वीं सदी में इसका नाम आघाटपुर या आघाट दुर्ग/आघटपुर मिलता है।
- आहड़ संस्कृति को बनास संस्कृति भी कहा जाता है।
- आहड़ का प्राचीन नाम ताम्रवती नगरी था। जिसका कारण वहाँ से प्राप्त ताम्र उपकरणों की प्राप्ति है।
- इस सभ्यता का उत्खन्न सर्वप्रथम 1953 ई. में अक्षय कीर्ति व्यास द्वारा करवाया गया तद्पश्चात् सन् 1954 में रतनचन्द अग्रवाल तथा सन् 1961 में डॉ. एच. डी. सांकलिया द्वारा कराया गया।
- यह लगभग 4000 वर्ष पुरानी प्रस्तर धातु युगीन या ताम्र-पाषाणयुगीन (Chalcholithic) सभ्यता है।
- आहड़ लाल व काले मृद्भाण्ड (Red & Black Earthenware) वाली संस्कृति का प्रमुख केन्द्र था।
- यहाँ के लोग चावल (Paddy) से परिचित थे। (कृषि से परिचित थे)

बैराठ (जयपुर)

- इस सभ्यता के स्थल बीजक की पहाड़ी, भीमजी की डूंगरी तथा महादेव डूंगरी इत्यादि स्थानों से प्राप्त हुए है।
- आधुनिक नाम बैराठ है, जो पहले विराटनगर कहलाता था।
- बैराठ प्राचीन मत्स्य प्रदेश की राजधानी रही है।
- महाभारत काल में पाण्डवों ने वनवास का अंतिम वर्ष छद्म रूप से ही यहीं बिताया था।
- 1938 ई. में कैप्टन बर्ट ने यहां मौर्य कालीन बाह्मी लिपि में उत्कीर्ण अशोक का शिलालेख-**भाबु अभिलेख** खोजा।
- 1936 ई. में दयाराम साहनी ने बीजक की डूंगरी का उत्खनन किया। इस दौरान मौर्यकालीन अशोक स्तम्भ, बौद्ध विहार आदि के ध्वशांवशेष प्राप्त हुए। यह महत्वपूर्ण बौद्ध केन्द्र था।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने यहाँ की यात्रा की थी। (7वीं सदी में)
- यहाँ पर शुंग एवं कुषाण कालीन अवशेष प्राप्त हुए है।
- इस संस्कृति के लोग लौह धातु से परिचित थे।
- इनका जीवन पूर्णत: ग्रामीण संस्कृति का था।

गिलूण्ड (राजसमंद)

- यह बनास नदी के तट पर स्थित हैं।
- यहां ताम्र पाषणयुगीन एवं बाद की सभ्यताओं के अवशेष प्राप्त हुए।
- सन् 1957-58 में यहां पर उत्खनन करवाया गया।
- यह संस्कृति स्थल हड़प्पा से भी प्राचीन है।
- यहां के मकानों में पक्की ईटों का प्रयोग किया गया।
- इसका संबंध हड़प्पा संस्कृति से था।
- यहाँ से प्राप्त काले एवं लाल रंग के बर्तन अलंकृत है।

गणेश्वर (नीम का थाना-सीकर)

- यह स्थल ताम्रयुगीन सांस्कृतिक केन्द्रों में प्राचीनतम् है, तथा यह कांतली नदी के तट पर स्थित था।
- इसे भारत की ताम्रयुगीन सभ्यताओं की जननी कहा जाता है।
- इस सभ्यता स्थल का उत्खनन 1966 ई. में आर.सी.अग्रवाल एवं विजय कुमार के नेतृत्व में किया गया।
- इस सभ्यता के 99 प्रतिशत उपकरण तथा औजार ताम्बे के प्राप्त हुए।
- यहां पर मकान पत्थरों से बनाये जाते थे व ईटों का उपयोग नहीं किया जाता था।
- यहां पर कुल्हाड़े, तीरे, भाले, सुईया, मछली पकड़ने के कांटे आदि प्राप्त हुए है।

बागोर (भीलवाड़ा)

- यह कोठारी नदी के तट पर स्थित है, जो बनास की सहायक नदी है।
- यहां उत्खनन से संबंधित स्थल **महासतियों का टीला** कहलाता है।
- बागोर से **पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य** मिले है।
- इसका उत्खनन 1967-69 वी.एन. मिश्रा व डॉ. एल.एस. लैशनि द्वारा किया गया।

बालाथल (वल्लभनगर-उदयपुर)

- यह सभ्यता बेड़च नदी के तट पर स्थित थी, तथा ताम्र-पाषाण युगीन कालीन सभ्यता थी।
- इसकी खोज सर्वप्रथम सन् 1936 ई. में डॉ. वी.एन.मिश्रा द्वारा बनास संस्कृति सर्वेक्षण अभियान के तहत की गई।
- इसका उत्खनन सर्वप्रथम सन् 1939 ई. में वी.एस. शिंदे, बी.एन. मिश्रा डॉ. देव कोठारी व डॉ. ललित पाण्डे द्वारा किया गया।
- इसी स्थान पर लोहा गलाने की पांच भट्टियाँ प्राप्त हुई है।

रंगमहल (हनुमानगढ़)

- यह स्थल सरस्वती (घग्घर) नदी के तट पर स्थित था।
- इसका उत्खन्न सन् 1952-54 ई में श्रीमती डॉ. हन्नारिड के निर्देशन में ताम्रयुगीन सभ्यता स्थल स्वीडिश दल द्वारा किया गया।

ओझियाना (भीलवाड़ा)

- यहां पर ताम्रयुगीन सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए है।
- यह स्थल खारी नदी के तट पर स्थित है।
- बी.एन.मिश्रा के नेतृत्व में सन् 2001 में यहां उत्खन्न करवाया गया।
- राज्य का प्राचीनतम वैष्णव मंदिर-घोसुंडी (जो द्वितीय सदी ईसा पूर्व का हैं) इसी सभ्यता स्थल के अन्तर्गत प्राप्त हुआ है।

नगरी (चित्तौड़गढ़)

- इसका प्राचीन नाम माध्यमिका था, जो चित्तौड़ के पास बेड़च नदी के तट पर स्थित था।
- इस स्थल का उल्लेख प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान पाणिनी द्वारा किया गया।
- यहां सर्वप्रथम सन् 1904 ई. में डी.आर. भण्डारकर के नेतृत्व में खुदाई की गयी।
- यहां से **शिवि जनपद** के सिक्के प्राप्त हुए है तथा गुप्तकालीन कला के अवशेष प्राप्त हुए है।
- नगरी शिवि जनपद की राजधानी रही है।

जोधपुरा (जयपुर)

- यह विराटनगर के पास साबी नदी के तट पर स्थित है। यह शुंग व कुषाण कालीन सभ्यता स्थल है।
- यहां पर पांच सांस्कृतिक कालों का बोध कराने वाले अवशेष प्राप्त हुए है।
- यहां से लगभग 2500 बी. सी. से 200 ई. तक अयस्क से लोहा प्रांप्त करने की प्राचीनतम भट्टी मिली।

सुनारी (खेतड़ी-झुंझुनूँ)

- यह कांतली नदी के तट पर स्थित लोहयुगीन सभ्यता का प्रमुख स्थल है।
- यहां पर लोह अयस्क से लोहा धातु प्राप्त करने की तथा लोहे के उपकरण बनाने की प्राचीनतम भट्टियां प्राप्त हुई हैं। लोहे के अस्त्र-शस्त्र एवं बर्तन प्राप्त हुए है।
- यहां के निवासी चावल व मांस खाते थे तथा रथों का प्रयोग करते थे, जो घोड़ों द्वारा खींचे जाते थे।
- यहां से एक लोहे का प्याला (कटोरा) प्राप्त हुआ है।

रेढ (टोंक)

- यह ढील नदी पर अवस्थित है।
- इसे प्राचीन भारत का 'टाटानगर' कहते है।
- इसका उत्खन्न के.एन.पुरी के नेतृत्व में हुआ।
- यहां पर मालव जनपद की मुद्रा तथा पूर्व गुप्तकालीन सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए है तथा लोह सामग्री के विशाल भण्डार भी प्राप्त हुए है।
- यहां से प्राचीन सिक्कों का भण्डार प्राप्त हुआ है।

नगर (टोंक)

- यह स्थल टोंक के उणियारा कस्बे के पास स्थित हैं।
- इसका प्राचीन नाम 'मालव नगर' था।
- यहां से गुप्तकालीन अवशेष, सिक्के व आहत मुद्राए प्राप्त हुई है।

नोह (भरतपुर)

- यह रूपारेल नदी (यमुना की सहायक नदी)के तट पर स्थित है।
- यहां से पांच सांस्कृतिक युगों के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- यहां पर उत्खनन रतनचन्द्र अग्रवाल द्वारा सन् 1963-64 में किया गया।
- 12 वीं सदी ई.पू. में यहां पर लोहे का प्रयोग किया जाता था।
- यहां मौर्यकालीन एवं कुषाणकालीन अवशेष भी प्राप्त हुए है।

सोंथी (बीकानेर)

- इस स्थल की खोज अमलानन्द घोष द्वारा 1953 ई. में की गई।
- यह स्थल कालीबंगा प्रथम नाम से प्रसिद्ध है। यहां पर हड़प्पायुगीन सभ्यता के अवशेष मिले है।

भीनमाल-(जालौर)

- यहां पर ईसा की प्रथम शताब्दी एवं गुप्तकालीन अवशेष प्राप्त हुए है।
- इस स्थान पर उत्खनन 1953 ई. में किया गया।
- भीनमाल का प्राचीनकाल में नाम श्रीमाल था।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग द्वारा इस नगर की यात्रा की गई।

- विद्वान ब्रह्मगुप्त, मण्डन, माद्य, माहुक, धाइल्ल इसी नगर से संबंधित रहे है।
- यहां के मृद्पात्रों पर विदेशी प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। जिसमें 'रोशन एम्पोरा' प्रमुख रूप से दृष्टिगोचर होता है।

निर्माण कैप्सूल –

- **तिलवाड़ा (बोडमेर)**-यह लूनी नदी के तट पर स्थित हैं। यहां पर 500 बी.सी. से 200 ई. तक के अवशेष प्राप्त हुए है। यहां पर उत्तर पाषाण युग के भी अवशेष प्राप्त हुए है।
- **ईसवाल (उदयपुर)**- वर्ष 2003 में इसका उत्खनन किया गया। यह लोहयुगीन सभ्यता स्थल है।
- **नलियासर (सांभर-जयपुर)**-यह चौहान पूर्व युगीन केन्द्र है।
- यहां गुप्तकालीन सिक्कों के भण्डार प्राप्त हुए।
- **कुराड़ा (परबतसर-नागौर)** यहां पर 1934 ई. में ताम्र सामग्री प्राप्त हुई थी।
- **दर (भरतपुर)** यहां से पांच से सात हजार वर्ष पूर्व के प्राचीन शैलचित्र (2003) प्राप्त हुए है।
- **गरदड़ा (बूंदी)** - यह छाजा नदी के तट पर स्थित है। यहां से बर्ड राइडिंग रॉक, पेंटिग प्राप्त हुई है।
- **जहाजपुर (भीलवाड़ा)**-यहां से महाभारत कालीन सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए है।
- लोद्रवा (जैसलमेर)-यह पंवार शासकों की राजधानी थी।
- **मल्लाह (भरतपुर)**-घना पक्षी विहार क्षेत्र में ताम्र हारपून तलवारें प्राप्त हुई है।
- **धौली मगरा (मावली, तहसील,उदयपुर)**-यहां आहड़ सभ्यता से संबंधित अवशेष प्राप्त हुए है। प्रो. ललित पाण्डे द्वारा यहां उत्खनन करवाया गया।

पौराणिक काल

- रामायण व महाभारत काल में राजस्थान में मरू-जांगल व मत्स्य जांगल प्रदेश विद्यमान थे। जांगल के पास सपादलक्ष था।
- पाण्डवों ने अपने वन प्रवास का तेरहवां वर्ष (अज्ञात वास) राजा विराट की राजधानी विराटपुर (वर्तमान बैराठ) में छद्म रूप से व्यतीत किया।
- जांगलदेश की राजधानी अहिच्छत्रपुर (नागौर) थी।
- महाभारत में अर्बुद प्रदेश का उल्लेख मिलता है।
- रामायण में मरूकान्तार प्रदेश का उल्लेख मिलता है।

जनपद युग (300 ई.पू. से 200 ई.)

- राजस्थान में आर्यों के आक्रमण के बाद अनेक जनपद स्थापित हुए।
- चौथी शताब्दी ई.पू. में मालव, अर्जुनामन एवं यौधेयों का प्रमुख था।
- प्रमुख जनपदों में भरतपुर का राजन्य, जयपुर का मत्स्य, चित्तौड़ का शिवि एवं अलवर का साल्व प्रमुख है।
- अर्जुनायन तथा यौद्धेय जनपद राजस्थान के उत्तर भाग में पाये जाते है।

मौर्ययुग

- राजस्थान में मौर्य सम्राट अशोक के दो अभिलेख बैराठ से प्राप्त हुए। इसमें त्रिरत्न अभिलेख (बुद्व, धम्म संघ) महत्वपूर्ण है।
- कणसवा गांव (कोटा) अभिलेख (738 ई.) से ज्ञात होता है, कि वह मौर्य शासक धवल का राज्य था।
- मौर्यवंशी राजा चित्रांगद मौर्य ने चित्तौड़गढ़ की स्थापना की जिसके मौर्यवंशी राजा 'मानमोरी' को हराकर बप्पा रावल ने चित्तौड़गढ़ जीता। (734 ई.)
- यवन शासक मिनाण्डर ने 150 ई.पू. में माध्यमिका (नगरी) को जीता था।
- राजस्थान में नलियासर, बैराठ व नगरी से यूनानी राजाओं के सिक्के मिले।

गुप्तकाल

- गुप्तों के उदय से पूर्व राजस्थान पर विदेशी शकों का शासन था। रूद्रदामन द्वितीय यहां का महाक्षत्रप था।
- समुद्रगुप्त ने रूद्रदामन द्वितीय को हराकर दक्षिणी राजस्थान को अपने साम्राज्य में मिलाया (351 ई. में)
- राजस्थान में गुप्तकाल की प्रतिमाएं अमझेरा (डूँगरपुर), कल्याणपुर व जगत (उदयपुर), आम्बानेरी (जयपुर), मण्डोर, ओसियाँ (जोधपुर), नीलकण्ठ, सेचली (अलवर) से प्राप्त हुई है।

हुणों के आक्रमण

- हुण राजा तोरमाण ने 503 ई. में गुप्त राजाओं को हराकर राजस्थान में अपना राज्य स्थापित किया था।
- तोरमाण के पुत्र मिहिरकुल ने छठी शताब्दी मे बाड़ोली (चित्तौड़गढ़) में एक शिव मन्दिर का निर्माण करवाया था।
- मेवाड़ के गुहिल शासक अल्लट (आलुराव) ने हुण राजकुमारी हरियादेवी से विवाह किया।

वर्धन युग

- राज्य में हुण सत्ता के पतन के पश्चात् सातवीं सदी मे गुर्जरों ने अपना राज्य स्थापित किया। गुर्जरों की राजधानी भीनमाल (जालौर) थी, जिसका प्राचीन नाम श्रीमाल था।
- प्रभाकर वर्धन ने गुर्जरों की सत्ता समाप्त कर राजस्थान में वर्धन राज्य स्थापित किया।
- प्रभाकर वर्धन के पुत्र हर्षवर्धन के साम्राज्य में राजस्थान के अधिकांश भाग शामिल थे, जो प्राय: अर्द्ध स्वतंत्र थे। जिनमें जांगल प्रदेश (बीकानेर) कोटा क्षेत्र, भीनमाल आदि आते थे।
- हर्ष की मृत्यु के पश्चात् प्रतिहार शासक नागभट्ट प्रथम (750-780) ने उसकी राजधानी कन्नौज को जीतकर अपने राज्य में मिलाया तथा उसने सिंध के मुसलमानों को भी हराया।

राजपूत युग

हर्ष की मृत्यु (647 ई.) के पश्चात् राजस्थान के विभिन्न हिस्सों में राजपूत की सत्ता स्थापित हुई। सातवीं सदी से बाहरवीं सदी इतिहास में राजपूत काल के नाम से जानी जाती है।

राजपूतों की उत्पति के विषय में अनेक मत प्रचलित है। अत: यह प्रश्न विवादास्पद है। राजपूत शब्द की उत्पति राष्ट्रकूट से हुई। राजपूतों की उत्पति से संबंधित प्रमुख रूप से चार सिद्धान्त प्रचलित है-

अग्निकुण्ड से उत्पति : इस मत का उल्लेख चंदबरदायी रचित 'पृथ्वीराज रासों' में मिलता है। चंदबरदायी के अनुसार मुनि वशिष्ट ने आबू पर्वत पर यज्ञ से चार यौद्धाओं-प्रतिहार, परमार, चौहान, चालुक्य (सोलंकी) को उत्पन्न किया, जिनके चार प्रमुख वंश उत्पन्न हुए। मुहणोत नैणसी व सूर्यमल्ल मिश्रण ने भी इस मत का समर्थन किया।

विदेशी उत्पति सिद्धान्त : कर्नल जेम्स टॉड, वी.ए. स्मिथ, विलियम क्रुक इसके समर्थक है। इनके अनुसार राजपूत विदेशी जातियों जैसे शकों, पह्लवों व हुणों के वंश है।

प्राचीन क्षत्रियों से उत्पति : इस मत के अनुसार राजपूत सूर्य व चन्द्र वंशीय हैं इस मत के प्रमुख प्रतिपादक डॉ. गौरीशंकर हीराचंद औझा थे। इनके अनुसार राजपूत प्राचीन क्षत्रियों की संतान है।

मिश्रित उत्पति सिद्धान्त : डॉ. डी.पी. चटर्जी (चट्टोपाध्याय) इस मत के प्रमुख प्रतिपादक है। अनेक विद्वान, राजपूतों की उत्पति विदेशी जातियों से होने के साथ-साथ प्राचीन क्षत्रियों की संतान होना भी मानते है तथा ब्राह्मण वंश से भी इनकी उत्पति मानते है।

प्रारम्भिक राजपूत वंश		
मारवाड़	–	प्रतिहार व राठौड़
मेवाड़	–	गुहिल/सिसोदिया
सांभर	–	चौहान
अजमेर	–	चौहान
रणथम्भौर	–	चौहान
जालौर	–	सोनगरा चौहान

प्रारम्भिक राजपूत वंश		
सिरोही	–	देवड़ा चौहान
हाड़ा चौहान	–	हाड़ा चौहान
हाड़ौती	–	झाला चौहान
भीनमाल व आबू	–	चावड़ा (चौहान)
आमेर	–	कछवाहा
जैसलमेर	–	भाटी

गुर्जर-प्रतिहार

- यह वंश अग्निकुण्ड से उत्पन्न चार वंशों (प्रतिहार, परमार, चालुक्य, चौहान) में शामिल है।
- आठवीं से दशवीं शताब्दी तक राजस्थान में शासन करने वाले वंशों में प्रतिहार सबसे महत्वपूर्ण वंश था।
- उस समय राजस्थान या राजपूताना नाम की कोई राजनैतिक ईकाई विद्यमान नहीं थी तथा सम्पूर्ण प्रदेश गुर्जरत्रा 'गुर्जर' नाम से जाना जाता थ। अत: इस क्षेत्र का स्वामी होने के कारण कालान्तर में ये गुर्जर -प्रतिहार कहलाये। गुर्जर प्रतिहारों का मूल स्थान उज्जैन माना जाता है।
- मुहणोत नैणसी ने प्रतिहारों की 26 शाखाओं का उल्लेख किया है। जिनमें मण्डोर के शाखा तथा दूसरी भीनमाल की शाखा।

मंडोर के प्रतिहार

- मंडोर प्रतिहार वंश के संस्थापक राजा हरिशचन्द्र थे। जिनके वंशजों ने मण्डोर पर शासन किया।
- हरिश्चन्द्र की क्षत्रिय पत्नी से चार पुत्र-रज्जिल, भोगभट्ट, कक्क व दद्द उत्पन्न हुए।
- रज्जिल के पुत्र नरभट्ट ने पेल्लोपेल्लि विरूद्ध धारण किया।
- नरभट्ट के पुत्र नागभट्ट ने मंडोर के स्थान पर मेदन्तक (मेड़ता) को अपनी राजधानी बनाया।
- कक्क के प्रतापी एवं विद्वान राजा था।
- कक्क के पश्चात बाउक राजा बना।
- बाउक के बाद उसका सौतेला भाई कक्कुक मंडोर के प्रतिहारों का शासक बना।
- कक्कुक के उत्तराधिकारियों के बारे में हमें कोई जानकारी उपलब्ध नही हैं। संभव है, वे लोब सुल्तान इल्तुतमिश के समय तक मंडोर के स्वामी बने रहे थे।
- 1395 ई. में इन्दा प्रतिहार सामन्त उगम सी ने राजा हम्मीद से परेशान होकर राठौर वीरम के पुत्र राव चुड़ा को मंडोर का दुर्ग दहेज में दिया।

''इंदा तणो उपकार कमधज कदै न बिसरे।
चूड़े चंवरी चाड़ दियो मंडावर दायजे॥''

- इस घटना के साथ ही प्रतिहारों का प्रभाव समाप्त हो जाता है, तथा धीरे-धीरे समूचा मारवाड़ राठौड़ों के अधिकार में चला जाता है

भीनमाल (जालौर) के प्रतिहार

- इस शाखा का प्रर्वतक नागभट्ट प्रथम था।

नागभटट प्रथम (750-780 ई.)-

- नागभट्ट प्रथम ने संभवत: भीनमाल के चावड़ा शासकों के अधीन रहते हुए अरबों (जनैद सेनापति) से युद्ध किया था।
- नागभटट् प्रथम ने अपनी राजधानी जाबालीपुर (जालौर) में स्थापित की राष्ट्रकूट अमोघवर्ष के संजन ताम्रपत्र से जानकारी मिलती है, कि उज्जैन मे हुए हिरण्यर्मदान समारोह (राष्ट्रपति-दंतिदुर्ग का महादान) में वह प्रतिहारी के रूप में उपस्थित था।

वत्सराज (780-805)-

- वत्सराज को **'रणहस्तिन'** कहा गया है। उसके समय कन्नौज के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष (पाल, प्रतिहार, राष्ट्रकूट) प्रारम्भ होता है।
- उसने कन्नौज के इन्द्रायुद्ध एवं बंगाल (गौड़) के मुद्गागिरी-(मुंगेर) के युद्ध में धर्मपाल को हराया।
- चौहान दुर्लभराज उसका सामन्त था। वह राष्ट्रकूट शासक ध्रुव (धारावर्ष) से परास्त हुआ।
- वत्सराज को प्रतिहार साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक माना जा सकता है।

नागभटट द्वितीय (805-833)-

- वत्सराज के बाद उसका पुत्र नागभटट द्वितीय गद्दी पर बैठा।
- इसे **नागावलोक** भी कहते है। उसने कान्यकुब्ज (कन्नौज) पर अधिकार कर उसे प्रतिहार सम्राज्य की राजधानी बनाया।
- उसने कन्नौज के चक्रायुद्ध को हराया। ग्वालियर अभिलेख के अनुसार उसने तुरूश्कों (मुसलमानों) को पराजित किया।
- अंतिम दिनों में राष्ट्रकूटों के भय से नाग द्वितीय ने गंगा में जल समाधि ली थी।

मिहिर भोज प्रथम (836-885)-

- वह इस वंश का सर्वाधिक महत्वपूर्ण शासक था। 'मिहिर' एवं 'प्रभास' उसकी उपाधियॉ है।
- भोज प्रथम मिहिरभोज की उपाधि आदिवराह (ग्वालियर अभिलेख) थी।
- वह परम भागवत् भक्त था।
- वह विष्णु का उपासक था।
- कल्हण एवं अरबी यात्री सुलेमान (जो इस काल में भारत आया) के विवरण से भी इसकी जानकारी मिलती है।
- भोज ने कन्नौज को पुन: प्राप्त कर उसे प्रतिहारों की राजधानी बनाया। (रामभद्र के काल में यह प्रतिहारों के हाथ से निकल गया था)
- उसने राष्ट्रकूट कृष्ण तृतीय को हराकर मालवा प्राप्त किया।
- सुलेमान ने भोज को अरबों का सबसे बड़ा शत्रु बताया। भोज ने आदिवराह द्रम्म नामक सिक्का चलाया तथा उसके एक तरफ वराह की आकृति अंकित करवायी।
- मिहिरभोज पाल देवपाल एवं राष्ट्रकूट ध्रुव से पराजित हुआ था।

महेन्द्रपाल प्रथम -

- मिहिरभोज के पश्चात उसका पुत्र महेन्द्रपाल प्रथम (835-95) शासक बना लेखों में उसे परमभटटारक, महाराजधिराज, परमेश्वर कहा गया है।
- उसकी सभा में **प्रसिद्ध विद्वान राजशेखर** निवास करता था, जो उसका राजगुरू था।

- राजशेखर ने कर्पूरमंजरी, काव्यमीमांसा, विद्धशालभंजिका, बालभारत, बालरामायण, भुवकोश, हरविलास एवं प्रचण्ड पाण्डव जैसे ग्रन्थों की रचना की।
- कर्पुरमंजरी प्राकृत भाषा में तथा अन्य ग्रन्थ संस्कृत भाषा में रचित है।
- महेन्द्रपाल के शासन काल में राजनैतिक एवं सांस्कृतिक दोनों दृष्ट्रियों से प्रतिहार साम्राज्य की अभूतपूर्व प्रगति हुई।

महिपाल प्रथम-

- महिपाल (912-943) एक कुशल एवं प्रतापी शासक था, उसके शासन काल में बगदाद निवासी अल मसूदी गुजरात आया। क्षेमेश्वर ने अपने ग्रन्थ चण्डकोशिकम् में महिपाल की विजयों का उललेख किया।
- अलमसूदी गुर्जर प्रतिहारों को 'अल गूजर' (गुर्जर का अपभ्रंश) और राजा को 'बौरा' कहकर पुकारता था, जो संभवत आदिवराह का अशुद्ध उच्चारण है।
- राजशेखर महिपाल का भी राजगुरू था। उसने महिपाल प्रथम को रघुवंश मृकुटमणि' तथा रघुकुल मुक्तामणि' कहा। उसने उसे आर्यवर्त का महाराजधिराज भी कहा।
- महिपाल प्रथम के बाद प्रतिहार साम्राज्य का विघटन प्रारम्भ हो जाता है।
- ह्वेनसांग ने गूर्जर राज्य को पश्चिम भारत का दूसरा सबसे बड़ा राज्य कहा।
- इस वंश का अंतिम शासक यशपाल (1036) था।
- अलमसूदी, सुलेमान, अबूजैद आदि अरब यात्रियों ने गूर्जर प्रतिहारों को **जुज** कहा।
- **सुलेमान**-''मिहिरभोज के पास विशाल अश्वसेना है और वह इस्लाम का बड़ा शत्रु है। उसका साम्राज्य समृद्ध हे, जिसमें सोने-चाँदी की बहुत सी खानें है। राज्य चोरी-डकैती से मुक्त है।''9वीं सदी में भारत आने वाला अरब यात्री सुलेमान पाल एवं प्रतिहार शासकों (मिहिरभोज) के तात्कालीन आर्थिक, राजनैतिक तथा सामाजिक स्थिति का वर्णन करता है।

मेवाड़ का गुहिल/सिसौदिया वंश

मेवाड़ को प्राचीन काल में शिवि, प्राग्वाट, मेदपाट कहा गया है। गुहिल वंश को गुहिलोत, गोहिल्य, गोहिल, गोमिल भी कहा गया है। मेवाड़ का राजवंश विश्व के सबसे प्राचीन राजवंशों में शामिल है। मेवाड़ के महाराणा 'हिन्दुआ सूरज' कहलाते थे। मेवाड़ के राज्य चिह्न में राजपूत व्यक्ति के साथ एक भील सरदार का चित्र अंकित है।

गुहिल

- गुहिल या गुहादित्य गुहिल वंश का संस्थापक था।
- भगवान राज के पुत्र कुश व वंशज माना जाने वाला गुहिल आनन्दपुर (गुजरात) का निवासी था।
- गुहिल ने 565ई. में नागदा (उदयपुर) को अपनी राजधानी बनाकर स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।
- इनके पिता का नाम शिलादित्य एवं माता का नाम पुष्पवती था।

बप्पा रावल या काल भोज (734-753 ई.)

- बप्पा का मूल नाम कालभोज था तथा 'बप्पा' इसकी उपाधि थी।
- बप्पा रावल महेन्द्र द्वितीय का पुत्र था।
- हारित ऋषि के शिष्य बापा रावल ने 734 ई. में मार्य राजा मान मोरी से चित्तौड़ दुर्ग जीता।
- बप्पा रावल ने कैलाशपुरी में एकलिंग मंदिर का निर्माण करवाया। बापा रावल भगवान एकलिंग नाथ को अपना कुलदेवता मानता था।
- बप्पा ने सोने के सिक्के चलाए थे।
- एकलिंग जी के पास इनकी समाधि 'बप्पा रावल' नाम से प्रसिद्ध है।
- इतिहासकार सी. वी. वैध ने बप्पा को **'चार्ल्स मार्टल'** कहा है।

अल्लट (आलूराव)

- बप्पा रावल के वंशज अल्लट (आलूराव) के समय मेवाड़ में बड़ी उन्नति हुई।
- उसने आहड़ को अपनी दूसरी राजधानी बनाया।
- उसने **मेवाड़ ने सर्वप्रथम नौकरशाही** का गठन किया।
- उसने हूण राजकुमारी हरियादेवी से विवाह किया।

क्षेमसिंह

- गुहिल शासक क्षेमसिंह (रणसिंह) ने मेवाड़ की रावल शाखा को जन्म दिया।

जेत्रसिंह (1213-53 ई.)

- तुर्क शासक इल्तुतमिश के नागदा आक्रमण (1222-29 ई.) का सफल प्रतिरोध किया।
- जयसिंह सूरी के नाटक हम्मीर मान-मर्दन में इसका वर्णन मिलता है।
- इन्होंने नागदा के स्थान पर चित्तौड़ को मेवाड़ की राजधानी बनाया।
- सन् 1248 ई. में सुल्तान नासिरूददीन महमूद ने मेवाड़ पर आक्रमण किया किन्तु उसे जैत्रसिंह ने हराया।
- जत्रसिंह के वंशज कुम्भकरण ने नेपाल में इस वंश की नींव डाली।

तेजसिंह (1253-1267 ई.)-

- तेजसिंह ने महाराजधिराज, परमेश्वर व परमभट्टारक उपाधियाँ धारण की।
- उसके शासन काल में **'श्रावक प्रतिक्रमण सुत्रचुर्णी'** पुस्तक की रचना की गयी थी।

रतनसिंह (1302-1303ई.)

- 1303 ई. में समरसिंह का पुत्र रतनसिंह चित्तौड़ का शासक बना, जो सन् 1303 ई. में अलाउददीन खिलजी के आक्रमण के समय लड़ते हुए शहीद हुआ।
- राजा रतनसिंह की **रानी पद्मिनी के जौहर** की गाथा विश्व प्रसिद्ध है।
- **गौरा-बादल** रत्नसिंह के सेनापति थे।
- रतनसिंह की मृत्यु के साथ रावल शाखा समाप्त हो गई।
- उनके समय चित्तौड़ का प्रथम साका (26 अगस्त 1303 ई.) हुआ था।
- अलाउद्दीन ने चित्तौड़ का राज्य अपने पुत्र खिज्र खां को सौंपकर उसका नाम खिज्राबाद रखा।
- इस युद्ध (1303 ई.) में इतिहासकार अमीर खुसरों उपस्थित था। अलाउद्दीन के आक्रमण के कारणों में उसकी महत्वाकांक्षा, चित्तौड़ की महत्वूपर्ण भौगौलिक स्थिति एवं रानी पद्मिनी को प्राप्त करना प्रमुख था।

हम्मीर (1326-64 ई.)

- सिसोदा गांव का जागीरदार तथा राणा अरिसिंह का पुत्र था।
- गुहिल वंश को एक शासक रणसिंह के पुत्र राहुप ने सिसौदा में राणा शाखा की नींव रखी। मालदेव सोनगरा एवं उसके पुत्र जैसा (जालौर) को हराकर उसने चित्तौड़ को पुन: जीता था।
- हम्मीर सिसोदिया वंश का संस्थापक तथा मेवाड़ का उद्धारक माना जाता है।
- हम्मीर को कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति में वीर राजा व विषमघाटी पंचानन (विकट आक्रमणों में सिंह के समान) कहा गया है।

- हम्मीर ने चित्तौड़ में **बरवड़ी माता** का भव्य मंदिर बनाया जो आज **अन्नपूर्णा मंदिर** के नाम से विद्यमान है।

क्षेत्रसिंह (1364-1382 ई.)

- हम्मीर के पश्चात उसका पुत्र खेता उर्फ क्षेत्रसिंह मेवाड़ का शासक बना।

लाखा (लक्षसिंह) (1382-1421 ई.)

- क्षेत्रसिंह के पश्चात उसका पुत्र लाखा मेवाड़ शासक बना।
- इनके काल में जावर में चांदी की खानों का पता चला।
- इनके काल में एक बंजारे ने पिछोला झील का निर्माण करवाया।
- लाखा ने मारवाड़ के शासक राव चूड़ा की पुत्री हंसाबाई से विवाह किया था।

कुंवर चूंडा

- चूंडा राणा लाखा का बड़ा पुत्र था। जिसे राजपूताने का भीष्म कहा जाता है।
- जब मारवाड़ के राव चूड़ा की पुत्री हँसाबाई का विवाह मेवाड़ के राणा लाखा के साथ कर दिया गया एवं उसके पुत्र मोकल को उत्तराधिकारी बनाने का पश्चिम किया गया तब चूंडा ने मेवाड़ से आजीवन निर्वासन पालन का व्रत कर लिया।

मोकल (1421-1433ई.)

- राणा लाखा का हंसाबाई से उत्पन्न पुत्र था। छोटी अवस्था होने के कारण मेवाड़ का राज काज इनके मामा रणमल (मारवाड़) के सहायोग से चला गया।
- मोकल ने समिधेश्वर मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया था।
- मोकल की हत्या चाचा, मेरा तथा महपा पंवार द्वारा की गयी।

कुम्भा या कुम्भकर्ण (1433-68 ई.)

- कुम्भा मोकल का ज्येष्ठ पुत्र था, उसकी माता का नाम सौभाग्य देवी था।
- कुम्भा मेवाड़ का महानतम शासक था।
- **कुम्भा की उपाधियाँ** - अभिनव भरताचार्य, हिन्दु सुरताण, छापगुरू, दानगुरू, शैलगुरू, राजगुरू, टोडरमल, हाल गुरू (गिरी, दुर्गा का स्वामी), राणों रासों (विद्वानों का आश्रय दाता)।
- कुम्भा के काम में गुजरात के पांच शासकों ने उससे युद्ध किया किन्तु सदैव कुम्भा ही विजय हुआ।
- उसने सारंगपुर के प्रसिद्ध युद्ध (1437 ई.) मे मालवा(राजधानी-मांडू)के महमूद खिलजी प्रथम को हराया। इस विजय के उपलक्ष्य में **विजय स्तम्भ** (चित्तौड़ 122 फुट, 9 मंजिलो) का निर्माण कराया। इसे **भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोष** तथा **'हिन्दू-देवताओं का अजायबघर'** कहा जाता है।
- विजय स्तम्भ के **शिल्पी जैता** एवं उसके **पुत्र नाथा, पूँजा, पोमा** थे।
- विजय स्तम्भ के मुख्य द्वार पर विष्णु की प्रतिमा होने के कारण इसे **विष्णु ध्वज स्तम्भ** कहते है। इसे कीर्तिस्तम्भ भी कहा जाता है।
- कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति का लेखक **कवि अत्रि भट्ट** व उसका पुत्र महेश भटट था।
- **चम्पानेर (गुजरात) की सन्धि** (1456)-यह सन्धि मालवा के महमूद खिलजी प्रथम व गुजरात के कुतुबद्दीन के बीच हुई। जिसकी अनुसार कुम्भा को हराकर उसके राज्य को आपस में बाँट लेना था।, किन्तु दोनों कुम्भा को हरा नहीं पाये थे।
- **रणकपुर मंदिर** का निर्माण पोरवाल जैन श्रावक धरणकशाह था। इसका प्रधान शिल्पी दैपाक था।
- कुम्भा ने मेवाड़ की रक्षा पंक्ति के कुल 84 दुर्गों में से कुम्भलगढ़, अचलगढ़ (आबू पर्वत), बसन्ती दुर्ग, मचान दुर्ग, बदनोर, दुर्ग, भोराट दुर्ग (सिरोही) सहित 32 दुर्गों का निर्माण करवाया।
- कुम्भा ने कुम्भास्वामी मंदिर, एकलिंगजी मंदिर श्रृंगार गौरी मंदिर तथा चित्तौड़ दुर्ग का पुनः निर्माण करवाया तथा कैलाशपुरी में विष्णु मंदिर का निर्माण करवाया।
- महाराणा कुंभा ने बदनोर (भीलवाड़ा) में **कुशलामाता** के मंदिर का निर्माण करवाया।
- कान्ह व्यास द्वारा रचित **एकलिंग-माहात्म्य** पुस्तक का प्रथम भाग 'राजवर्णन' स्वयं कुम्भा द्वारा लिखा।
- राणा कुम्भा ने **संगीत राज**, **संगीत मीमांसा**, **रसिक प्रिया** (जयदेव रचित गीतगोविन्द पर टीका), कामराज-रतिसार, **सुधा-प्रबन्ध** आदि पुस्तकों की रचना की। उसने **संगीतरत्नाकर** व **चण्डी शतक** पर टीका लिखी।
- कुम्भा ने प्रसिद्ध वास्तुकार **मण्डन** को आश्रय दिया।
- जैनाचार्य हीरानन्द कुम्भा के गुरू थे। तथा सारंग व्यास कुम्भा के संगीत गुरू थे।
- मण्डन ने वास्तुशास्त्र, प्रासाद-मण्डल, देवमूर्ति -प्रकरण, वास्तुआर, कोदंड मण्डन, शकुनमण्डन, रूप मण्डन (रूपावतार), वास्तुमण्डन, राजवल्लभ आदि पुस्तके लिखी।
- कुम्भा की हत्या उसके पुत्र उदा (उदयकरण) ने 1468 में की।

राणा सांगा/संग्राम सिंह (1509-28 ई.)

- राणा सांगा रायसिंह या रायमल का पुत्र था। इनकी माता का नाम रतन कुंवरी था।
- सांगा मेवाड़ का सबसे प्रतापी शासक था, जो **हिन्दुपत** कहलाता था।
- राणा सांगा को **'सैनिकों का भग्नावशेष'** कहते है।
- कर्नट टॉड के अनुसार सांगा के दरबार में 7 राजा, 9 राव, 104 सरदार बैठते थे।
- सन् 1519 में को **गागरोन (झालावाड़) युद्ध** में मालवा के शासक महमूद खिलजी द्वितीय को हराकर बंदी बनाया फिर रिहा किया।
- प्रसिद्ध भक्त कवयित्री मीरा, सांगा के ज्येष्ठ पुत्र भोजराज की पत्नी थी।
- सांगा ने **खातोली (बूंदी) के युद्ध** (1517 ई.) व बाड़ी (धौलपुर) के युद्ध (1518 ई.) में दिल्ली के अफगाना शासक इब्राहीम लोदी को हराया।
- फरवरी 1527 ई. को बाबर तथा राणा सांगा के बीच खानवा का युद्ध लड़ा गया जिसमें सांग विजयी रहे।
- ऐतिहासिक **खानवा के युद्ध (17 मार्च, 1527 ई.)** में सांगा मुगल शासक बाबर से हारा।
- 30 जनवरी, 1528 को कालपी में सरदारों द्वारा विष दिये जाने के कारण सांगा की मृत्यु हुई। माण्डलगढ़ में सांगा का अंतिम संस्कार किया गया।
- सांगा वह अंतिम हिन्दू राजा था, जिसके सेनापतित्व में सब राजपूत जातियाँ विदेशियों को भारत से बाहर निकालने के लिए सम्मिलित हुई थी।

विक्रमादित्य (1531-1536 ई.)

- राणा सांगा का अल्पवयस्क पुत्र ।
- माता का नाम हाडारानी कर्णावती अथवा कमलावती।
- माता कमलावती ने संरक्षिका के रूप में कार्य किया।
- कर्णावती ने बहादुरशाह (गुजरात) के आक्रमण के समय (1533 ई. में) हुमायुं को सहायता हेतु राखी भेजी लेकिन हुमांयु ने सहायक नहीं की।

- सन् 1534 में बहादुरशाह ने पुनः चित्तौड़ पर आक्रमण किया। उस समय कर्णावती ने अपने पुत्र विक्रमादित्य एवं उदयसिंह को उनके ननिहाल बूंदी भेज दिया था। इस युद्ध में चित्तौड़ की सेना का नेतृत्व देवलिया के रावत बाघ सिंह ने किया। रानी कर्णावती ने जौहर किया। यह **चित्तौड़ का दूसरा साका** कहलाता है।

बनवीर (1536-37 ई.)

- बनवीर सांगा के भाई पृथ्वीराज का अनौरस (दासी) पुत्र था।
- बनवीर ने विक्रमादित्य की हत्या कर दी।
- पन्नाधायने अपने पुत्र चन्दन का बलिदान देकर राजकुमार उदयसिंह की रक्षा की।

राणा उदयसिंह द्वितीय (1537-72 ई.)

- उदयसिंह द्वितीय सन् 1537 में मालदेव (मारवाड़) की सहायता से मेवाड़ का शासक बना।
- सन् 1544 में शेरशाह के चित्तौड़ आक्रमण के समय उसने अधीनता स्वीकार कर सन्धि कर ली।
- सन् 1567-68 में अकबर द्वारा चित्तौड़ पर आक्रमण के समय उसने किले की रक्षा का भार जयमल राठौड़ (मेड़ता निवासी व बदनोर का जागीरदार) व फतहसिंह सिसोदिया उर्फ फत्ता (आमेट का सामान्त) को सौंपकर अरावली पहाड़ियों में प्रस्थान किया।
- सन् 1568 में अकबर ने चित्तौड़ पर कब्जा कर लिया। इस युद्ध में जयमल व फत्ता शहीद हुए। फूलकंवर के नेतृत्व में जौहर हुआ। यह **चित्तौड़ का तीसरा साका** कहलाता है।
- अकबर ने **जयमल व फत्ता** की वीरता से प्रभावित होकर आगरे के किले के दरवाजे पर इनकी पाषाण मूर्तियाँ स्थापित करवायी।
- प्रसिद्ध लोकदेवता **कल्लाजी राठौड़** भी इसी युद्ध में शहीद हुए थे।
- **गोगुन्दा** में 1572 ई. उदयसिंह की मृत्यु हुई एवं वहीं इनकी छतरी बनी हुई है।
- राणा उदयसिंह ने अपनी रानी भटियाणी पुत्र जगमाल को अपना उत्तराधिकारी बनाया।
- अखैराज सोनगरा जो प्रताप के नाना थे, जिन्होंने जगमाल को हटाकर प्रताप को गद्दी पर बैठाया। सलूम्बर के सरदार कृष्णदास चुंडावत ने प्रताप के कमरे में राजकीय तलवार बांधी।

महाराणा प्रताप (1572-97 ई.)

- उदयसिंह व जयवन्ता बाई के पुत्र प्रताप का जन्म 9 मई, 1540 ई. कुम्भलगढ़ दुर्ग में हुआ।
- इनको 26 फरवरी, 1572 ई. को गोगुन्दा में सिंहासन पर बिठाया गया।
- प्रताप का राज्यभिषेक समारोह कुम्भलगढ़ में किया गया।
- प्रताप को मेवाड़ केसरी, हल्दीघाटी का शेर, राणा कीका (छोटा बच्चा) व पाथल के नाम से भी जाना जाता है।
- महाराणा प्रताप अकबर की अधीनता स्वीकार कराने के लिए अनेक मुगल दूत आये उनमें जलाल खाँ कोरची (1572 ई.) मानसिंह (1572), भगवानदास (1573 ई.) टोडमरल (1573 ई.) प्रमुख थे। (**Trick जमाभटो**)
- हल्दीघाटी का युद्ध 18 जून, 1576 को महाराणा प्रताप एवं अकबर की सैना के बीच लड़ा गया जिसमें महाराणा प्रताप की पराजय हुई।
- हल्दीघाटी युद्ध को कर्नल टॉड ने **''मेवाड़ की थर्मोपल्ली''** कहा।
- अबुल फजल ने हल्दीघाटी के युद्ध को ''खमनौर का युद्ध'' कहा।
- बदायुनी ने हल्दीघाटी के युद्धों को ''गोगुन्दा का युद्ध'' कहा।
- हल्दीघाटी के युद्ध में विख्यात मुगल लेखक बंदायुनी भी उपस्थित था। उसने अपनी पुस्तक मुतखाब-उत-तवारिख' में इस युद्ध का वर्णन किया।
- हल्दीघाटी युद्ध के पश्चात अकबर ने मेवाड़ में चार प्रमुख थाने स्थापित करवाये जो मेवाड़ के चारों ओर स्थित थे वे डूँगरपुर की घाटियों में 'देवल', उदयपुर में दोबारी, पानी में देसूरी व अजमेर में दिवेर थे।
- हल्दीघाटी के युद्ध में प्रताप के हरावल दस्ते में अफगान हकीम खाँ सूर, राणा पूँजा भील, रामसिंह तंवर (ग्वालियर) शमिल थे।
- महाराणा प्रताप का मुस्लिम सैनापति ''हकिम खां सूर'' था।
- हकीम खां सूर का मकबरा खमनोर (राजसमंद) में स्थित है।
- प्रताप के अश्व का नाम चेतक था।
- हल्दी घाटी के पास चेतक स्मारक बना हुआ है।
- प्रताप के हाथी का नाम **'रामप्रसाद'** था। हल्दीघाटी के युद्ध के पश्चात मानसिंह कछवाह ने इसे अकबर को भेंट किया। अकबर ने इस हाथी का नाम **'पीरप्रसाद'** रखा।
- **कुम्भलगढ़ का युद्ध (1578 ई.)**- इस युद्ध में मुगल सेनापति शाहबाज खाँ ने महाराणा प्रताप को हराया ।
- प्रताप ने अपनी राजधानी गोगुन्दा से कैलवाड़ा बनाई फिर चावण्ड में स्थानांतरित की।
- **दिवेर के युद्ध (1582 ई.)**- में प्रताप ने अकबर के चाचा व मुगल सेनापति सुल्तान खां को हराया यहाँ इनके पुत्र अमरसिंह ने अद्भूत वीरता प्रदर्शित की। दिवेर युद्ध के बाद में ही प्रताप की विजयों का पुनः श्री गणेश माना जाता है। दिवेर के युद्ध को कर्नल टॉड ने **'मेवाड का मेराथन'** कहा। वास्तविक मेराथन का युद्ध (490 बी.सी.) में हुआ जिसमें एथेस वासियों ने ईरानियों (दारा अथवा डेरियस) को हराया।
- सन् 1585 से 1615 ई. तक चावण्ड मेवाड़ की राजधानी रही। यही 19 जनवरी, 1597 को प्रताप का 57वर्ष की आयु में देहान्त हो गया।
- चावण्ड मेवाड़ की **संकटकालीन राजधानी** रही थी।
- **बाण्डोली गांव** में प्रताप की 8 खम्भों वाली छतरी बनी हुई है, जिसका निर्माण अमर सिंह ने करवाया।

महाराणा अमरसिंह प्रथम (1597-1620 ई.)

- अमरसिंह प्रथम महाराणा प्रताप के पुत्र थे। प्रताप के देहान्त के बाद चावण्ड में उनका राज्याभिषेक हुआ।
- सन् 1615 ई. में जहांगीर की अनुमति से खुर्रम व अमरसिंह के बीच सन्धि हुई जिसे **मुगल-मेवाड़ सन्धि** के नाम से जाना जाता है। इसके द्वारा मेवाड़ ने भी मुगलों की अधीनता स्वीकाय कर ली। संधि से मुगल-मेवाड़ संघर्ष का अंत हुआ।
- कला व साहित्य में प्रगति के कारण अमरसिंह का काल **'राजपूत काल का अभ्युदय'** कहा जाता है।
- 26 जनवरी, 1620 ई. को उदयपुर में अमरसिंह का देहान्त हो गया। उनका अंतिम संस्कार आहड़ के निकट **गंगोद्भव** के पास किया गया।
- महाराणा अमरसिंह प्रथम के बाद सभी महाराणाओं की छतरीयां गंगों गांव में बनाई गयी।

महाराणा कर्णसिंह (1620-28 ई.)

- अमरसिंह प्रथम के पुत्र।
- जहांगीर के विरूद्ध विद्रोह करने वाला इसका पुत्र खुर्रम इनके पास भी आया था। वह देलवाड़ा की हवेली व जगमंदिर में रहा।
- कर्णसिंह ने ही पिछोला झील में जगमंदिर महलों को बनवाना शुरू किया, जिसे उसके पुत्र जगत सिंह प्रथम ने पूरा करवाया।

महाराणा जगतसिंह प्रथम (1628-52 ई.)

- कर्णसिंह के पश्चात शासक बने, जो बहुत दानी थे।

- उन्होंने जगन्नाथ राय (जगदीश), का भव्य विष्णु मंदिर बनवाया। यह **पंचायतन मन्दिर** शैली में बनाया गया गया है। इसे 'सपनों से बना मंदिर' भी कहते है। यह मन्दिर अर्जुन की देखरेख में शिल्पी भाणा सुथार व उसके पुत्र मुकुन्द द्वारा बनाया गया। जगदीश मंदिर के पास **धाय का मंदिर** महाराणा की धाय नौजुबाई द्वारा बनवाया गया।
- **जगन्नाथ राय प्रशस्ति** के रचयिता **कृष्ण भट्ट** थे।

महाराणा राजसिंह (1652-80 ई.)

- जगतसिंह प्रथम के पश्चात राजसिंह मेवाड़ के महाराणा बने।
- इन्होंने राजसंमद झील का निर्माण करवाया (गोमती नदी पर)।
- राजसिंह ने किशनगढ़ की राजकुमारी चारूमती (रूपसिंह की बहन) से विवाह किया जिससे औरंगजेब स्वंय विवाह करना चाहता था।
- औरंगजैब की राजसिंह के प्रति नाराजगी का कारण चारूमति प्रकरण था।
- राजसिंह ने औरंगजेब द्वारा लगाये गये ''जजिया कर'' को देने से मना कर दिया।
- राजसिंह ने जोधपुर के अजीत सिंह को 'आश्रय दिया, मुगलों को जजिया देना स्वीकार नहीं किया। उनहोंने श्रीनाथजी की मूर्ति को सिंहाड़ में प्रतिष्ठित करवाया।
- राजसिंह ने उदयपुर में अम्बामाता का तथा कांकरोली में द्वारकाधीश का मंदिर बनवाया।
- राजसिंह ने राजसमंद के पास राजनगर कस्बा बसाया।

महाराणा जयसिंह (1680-98 ई.)

- राजसिंह के बाद उनके पुत्र जयसिंह महाराणा बने।
- जयसिंह ने गौमती, झामरी, रूपारेल, बगार नदियों के पानी को रोककर ढेबर नामक पर संगमरमर की झील बनवायी (1961) जिसे ढ़ेबर या जयसमंद झील कहते है।
- इन्हौने औरंगजेब के विद्रोही पुत्र अकबर को बगावत करने में मदद की।
- जयसिंह ने कुछ समय तक औरंगजेब से युद्ध किया, किन्तु अंत में शहजामे आजम से संन्धि कर ली।

महाराणा अमरसिंह द्वितीय (1968-1710 ई.)

- जयंसिह के पश्चात उनके पुत्र अमरसिंह द्वितीय शासक बने जोधपुर के अजीतसिंह व आमेर के सवाई जयसिंह की सहायता।
- उन्होंने मेवाड़ मारवाड़ एवं आमेर में एकता स्थापित करवायी।
- मारवाड़ के दुर्गादास राठौड़ ने इनके यहॉ सामन्त के रूप में सेवाए दी।

महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय (1710-34 ई.)

- अमरसिंह द्वितीय के बाद संग्रामसिंह द्वितीय शासक बने।
- उन्होंने ही मराठों के विरूद्ध राजस्थान के राजपूत नरेशों को संगठित करने के लिए हरड़ा सम्मेलन की योजना बनायी, परन्तु सम्मेलन के पूर्व ही उनका देहान्त हो गया।
- संग्राम सिंह द्वितीय ने ही सहेलियों की बाड़ी (उदयपुर) व सीसरमा गांव में वैद्यनाथ का विशाल मंदिर बनवाया।

महाराणा जगतसिंह द्वितीय (1734-41 ई.)

- संग्राम सिंह द्वितीय के बाद उनके पुत्र जगतसिंह द्वितीय शासक बने।
- इन्होंने **हुरड़ा सम्मेलन** (1734 ई.) की अध्यक्षता की।
- इन्होंने पिछोला झील में जगतनिवास महल बनवाया।
- मराठों ने सर्वप्रथम इन्हीं के काल में मेवाड़ में प्रवेश कर उनसे कर वसूला।
- महाराणा जगतसिंह द्वितीय के बाद क्रमशः महाराणा प्रतापसिंह द्वितीय (1741-54 ई.) महाराणा राजसिंह द्वितीय (1754-1761 ई.) महाराणा अरिसिंह (1761 ई.) मेवाड़ के शासक बने।

महाराणा भीमसिंह

- इनकी लड़की कृष्णाकुमारी के विवाह को लेकर जयपुर एवं जोधपुर में संघर्ष हुआ।
- महाराणा भीमसिंह ने ही 1818 ई. में ईस्ट कम्पनी से सन्धि कर विदेशी दासता स्वीकार की।

महाराणा स्वरूप सिंह

- ये सन् 1857 की क्रांति के समय मेवाड़ के राजा थे। क्रांति के समय इन्होंने अंग्रेजों की बढ़-चढ़कर सहायता की।

महाराणा शम्भूसिंह

- इनको सन् 1871 ई. में अंग्रेजों द्वारा 'ग्राण्ड कमाण्डर ऑफ दी स्टार ऑफ इंडिया उपाधि प्रदान की गयी।

महाराणा सज्जन सिंह

- इनके काल में स्वामी दयानन्द सरस्वती उदयपुर आये थे।
- राज्य का प्रथम समाचार पत्र **सज्जन कीर्ति सुधाकर** प्रकाशित (1876 ई.) किया गया।

महाराणा फतेहसिंह

- इन्होंने 1903 के कर्जन के दिल्ली दरबार में भाग लेने से इंकार किया, (कारण-'चेतावनी चुंगटिया' का प्रभाव -केसरी सिंह बारहट द्वारा रचित)
- इन्होंने **फतहसागर झील** का निर्माण करवाया।

महाराणा भोपालसिंह (1921-47)

- ये स्वतंत्रता के समय मेवाड़ के शासक थे तथा राजस्थान के प्रथम महाराज प्रमुख बनाये गये।

चौहान वंश

- 'चौहान वंश की उत्पत्ति चाहमान से हुई, जो संभवतः इनका आदिपुरूष रहा होगा।
- चंदबरदायी रचित 'पृथ्वीराज रासो' में चौहानों को 'अग्निकुण्ड' से उत्पन्न बताया गया।
- जयानक रचित 'पृथ्वीराज विजय' एवं नयनचंद्र सूरी द्वारा रचित 'हम्मीद महाकाव्य' ग्रन्थ में इन्हें सूर्यवंशी माना गया है।
- पं. गौरीशंकर हीराचंद ओझा भी चौहानों को सूर्यवंशी मानते है।
- **आबू अभिलेख (1320 ई.)** में इन्हें **चन्द्रवंशी** बताया गया है।
- कर्नल टॉड एवं डॉ. स्मिथ चौहानों को विदेशी मानते है।
- डॉ. दशरथ शर्मा **बिजोलिया लेख** (1170 ई.) के आधार पर चौहानों को वत्स गौत्रीय ब्राह्मण वंश की संतान मानते है।
- चौहानों का प्रारम्भिक राज्य नाडोल जूना खेड़ा (पाली) था।
- हर्षनाथ अभिलेख (973ई.) में चौहानों की प्राचीन राजस्थानी अनन्त प्रदेश (विग्रह राज द्वितीय कालीन सीकर के आस-पास) बतलायी गयी है। इस अभिलेख में चौहान शासक गुवक से लेकर दुर्लभराज द्वितीय तक की वंशावली दी गयी है।

शाकम्भरी एवं अजमेर के चौहान

चौहानों का मूल स्थान जांगलदेश में शाकम्भरी (सांभर) के आसपास सपादलक्ष माना जाता है। उनकी राजधानी अहिच्छत्रपुर नागौर) थी सवा लाख गाँव होने के कारण इसे सपादलक्ष कहा जाता था।

वासुदेव -

- शाकम्भरी के चौहान वंश का संस्थापक वासुदेव को माना जाता हैं जिसने 551 ई. के आसपास यह राज्य स्थापित किया।
- सांभर झील का निर्माण वासुदेव द्वारा करवाया गया।

गुवक प्रथम
- इसने सीकर में हर्षनाथ मंदिर का निर्माण करवाया जो चाहमानों के ईष्टदेव माने जाते है।

विग्रह राज द्वितीय
- यह चौहान वंश के प्रारम्भिक शासकों में बड़ा प्रभावशाली व योग्य शासक था।
- उसने गुजरात के मूलराज चालुक्य को हराया था।

अजयराज
- ये पृथ्वीराज प्रथम के पुत्र थे।
- अजयराज ने 1113 ई. में अजयमेरू (अजमेर) नगर बसाया।
- उसने इसी नगर को अपनी राजधानी बनाया एवं उसमें दुर्ग बनाया। जिसें 'पूर्व का दूसरा जिब्राल्टर' कहा जाता है।
- उसने चांदी व तांबे के सिक्के जारी करवाये।
- कुछ मुद्राओं पर उसकी रानी सोमल्ल देवी का नाम भी अंकित।

अर्णोराज (1133-53 ई.)
- यह अजयराज का पुत्र था।
- अर्णोराज ने तुर्क आक्रमणकारियों को बुरी तरह हराया।
- अजमेर में बाड़ी नदी पर अन्नासागर झील का निर्माण करवाया
- 1135 ई. पुष्कर के वराह मंदिर का निर्माण कराया।
- अर्णोराज की हत्या उसके पुत्र जग्गदेव ने की।

विग्रहराज चतुर्थ (1153-1164 ई.)
- अर्णोराज के पुत्र।
- जगदेव की हत्या करके शासक बने।
- विग्रहराज चतुर्थ जिसे बीसलदेव भी कहा जाता है शाकम्भरी व अजमेर का महान चौहान शासक था।
- इनका शासनकाल **सपादलक्ष का स्वर्णयुग** माना जाता है।
- इन्होंने संस्कृत भाषा में **'हरिकेली'** नामक नाटक की रचना की।
- हरिकेली नाटक के कुछ अंश अजमेर के 'अढ़ाई दिन का झोपड़े की दीवारों' पर उत्कीर्ण है।
- समकालीन लोग विग्रहराज चतुर्थ को **'कवि बान्धव'** नाम से पुकारते थे।
- ललित विग्रह राज नामक नाटक का रचयिता **सोमदेव** उनका दरबारी राजकवि था।
- इन्होंने अजमेर में **संस्कृत विद्यालय** की स्थापना की जिसे बाद में कुतुबद्दीन ऐबक ने तोड़कर **ढाई दिन का झोपड़ा** बनवा दिया। जिसे कर्नल टॉड ने **हिन्दु शिल्पकला का प्राचीनतम और पूर्ण परिष्कृत** नमूना बताया।
- विग्रहराज चतुर्थ ने बीसलपुर नामक कस्बे व झील निर्माण करवाया।

पृथ्वीराज-तृतीय (1177-1192 ई.)
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय प्रतापी राजा व श्रेष्ठ सेनानायक था।
- इनका जन्म 1166 ई. में हुआ।
- इनके पिता का नाम सोमेश्वर व माता का नाम कर्पुरी देवी था जो कल्चुरी राजा की पुत्री थी।
- 11 वर्ष की आयु में अजमेर का शासन संभाला था।
- प्रारम्भ में एक वर्ष तक कर्पुरी देवी ने राजकार्य में पृथ्वीराज को सहयोग दिया था।
- भुवनमल्ल, खाण्डेराव उसके सेनापति थे तथा कदम्ब वास (कैमास) इनका मुख्यमंत्री था।
- चंदबरदायी ने **पृथ्वीराज रासो** लिखा जिसे उसके पुत्र जल्हण ने पूरा किया।
- कन्नौज के राजा जयचंद के साथ पृथ्वीराज चौहान तृतीय के संबंध कटुंतापूर्ण थे।
- जयचंद की पुत्री संयोगिता को स्वंयबर से उठा कर वह अजमेर ले आया और उससे विवाह किया। जयचंद उनका मौसेरा भाई था।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय ने चन्दबरदायी, जयानक, जनार्दन, विश्वरूप, विद्यापती, गौड़ व गागीश्वर जैसे विद्वानों को आश्रय दिया।
- आल्हा व उदल महोबा के चंदेल शासक परमर्दीदेव के सेनानायक थे। दोनों वीर एवं साहसी थे। जो पृथ्वीराज के विरूद्ध लड़ते हुए शहीद हुए। (1182 ई. **महेबा युद्ध**)
- तराईन के प्रथम युद्ध (1191ई.) में उसने तुर्क आक्रमणकारी शहाबुदद्दीन मुहम्मद गौरी को बूरी तरह हरायां।
- तराईन के द्वितीय युद्ध (1192 ई.) में वह मुहम्मद गौरी से पृथ्वीराज चौहान हार गया तथा गौरी द्वारा बंदी बना लिया गया।
- ख्वाजा मुइनुददीन चिश्ती पृथ्वीराज चौहान के समय अजमेर आये।

रणथम्भौर के चौहान
- रणथम्भौर के चाहौन वंश की स्थापना पृथ्वीराज तृतीय के पुत्र गोविन्द राज ने की थी। गोविन्दराज ने दिल्ली सल्तनत की अधिनता स्वीकार कर ली थी।
- गोविन्दराज के पश्चात वाल्हण (वल्लनदेव), प्रल्हादन,
- वीरनारायण, वागभट्ट व जैत्रसिंह (जयसिम्हा), शासक बने।
- रणथम्भौर की चौहान शाखा का सबसे प्रतापी शासक हम्मीद देव को अपनाप उत्तराधिकारी नियुक्त किया।
- हम्मीर ने 17 युद्ध लड़े जिसमें 16 में वह विजय रहा। 16 युद्धों में विजय के उपलक्ष में उसने **कोटियजन यज्ञ** का आयोजन पं. विश्वरूप भटट के निर्देशन में कराया।
- सन् 1291 ई. में उसने जलालुददीन खिलजी के आक्रमण को विफल किया।
- उसने अलाउद्दीन के विद्रोही सेनानायक मुहम्मदशाह को शरण दी अत: अलाउद्दीन ने रणथम्भौर पर 1301 ई. में आक्रमण कर दिया। हम्मीर लड़ता हुआ मारा गया और उसकी पत्नी रंगदेवी ने जौहर किया **(जल जाहौर)**
- यह राजस्थान के इतिहास का प्रथम जौहर है।
- हम्मीर के सेनापति रणमल व रतिपाल ने इस युद्ध में हम्मीर के साथ विश्वासघात किया।
- अलाऊददीन खिलजी का प्रमुख सेनापति नुसरतखॉ इसी युद्ध में मारा गया।
- रणथम्भौर के युद्ध में प्रसिद्ध इतिहासकार अमीर खुसरों भी उपस्थित था।

जालौर के चौहान
- जालौर का प्राचीन नाम जबालीपुर था।
- यहां के शासक सोनगरा चौहान कहलाते थे।
- जालौर के चौहान वंश का संस्थापक कीर्तिपाल (कीतु) को माना जाता है।
- कीर्तिपाल के उत्तराधिकारियों में समरसिंह, उदयसिंह, चाचिगदेव, सामन्त सिंह एवं कान्हड़देव थे।
- यहॉ के अंतिम शासक कान्हड़देव (1296-1312 ई.) अलाउददीन खिलजी के आक्रमण के समय 1312 ई. में अपने पुत्र वीरमदेव के साथ मारा गया।
- 1312 ई. को अलाउददीन के आक्रमण के समय जालौर में साका हुआ।
- बीका दहीया ने कान्हड़देव के साथ विश्वासघात किया था।
- धाय गुलविहिश्त (अलाउददीन की पुत्री फिरोजा की धाय) ने कान्हड़देव के विरूद्ध जालौर आक्रमण का नेतृत्व किया था।
- पदमनाथ ने 'कान्हड़देव प्रबन्ध की रचना की।

सिरोही के चौहान

- यहाँ देवड़ा शाखा के चौहान थे। स्थापना 1311 ई. आस-पास लुम्बा द्वारा की गयी, उसकी राजधानी **चन्द्रावती** थी।
- इसी वंश के सहसमल ने 1425 ई. में **सिरोही नगर** की स्थापना कर इसे राजधानी बनाया।
- 11 सितम्बर, 1823 ई. में यहाँ के शासक शिवसिंह ने कम्पनी से संधि कर ली। कम्पनी के साथ संधि करने वाला राजस्थान का अंतिम राज्य था।

हाड़ौती के चौहान

- हाड़ा वंश का चौहानों से उत्पन्न माना जाता है। उनका आदिपुरूष हाड़ा नामक शासक था।
- हाड़ौती के अंतर्गत बूंदी, कोटा, झालावाड़, बाराँ आदि जिले आते है।

बूंदी राज्य का इतिहास

- बूंदी शहर बूंदा मीणा के नाम पर बसा था।
- इसका प्राचीन नाम वृन्दावती था।
- यहाँ चौहान वंश की स्थापना देवीसिंह (देवा) ने जैता मीणा को हराकर 1242 ई. को की थी।
- देवी सिंह के पुत्र जैत्रसिंह ने कोटा को विजय कर राजधानी बनाया (1274 ई.), वहां दुर्ग का निर्माण करवाया। इसके वंशज सुर्जन हाड़ा ने 1569 ई. में अकबर की अधीनता स्वीकार कर तथा रणथम्भौर दुर्ग मुगलों को सौंप दिया।
- राव बरसिंह हाड़ा वंश के प्रतापी शासक हुए। इन्होंने मेवाड़ के लाखा को हराया। राव बरसिंह को ही तारागढ़ दुर्ग का वास्तविक निर्माता माना गया।
- बूंदी के शासक विष्णु सिंह ने 1818 ई. में कम्पनी से संधि की।

कोटा राज्य का इतिहास

- कोटा प्रारम्भ में बूंदी रियासत का ही एक भाग था यहाँ हाड़ा चौहानों का शासक था।
- शाहजहाँ के समय 1631 ई. में बूंदी नरेश राव रतनसिंह के पुत्र राव माधोसिंह हाड़ा को कोटा का पृथक राज्य देकर उसे बूंदी से स्वतंत्र कर दिया। तभी से कोटा स्वतंत्र राज्य के रूप में अस्तित्व में आया।
- कोटा पूर्व में कोटिया भील के नियंत्रण में था। जिसे बूंदी के चौहान वंश कें संस्थापक देवा के पौत्र जैत्र सिंह ने मारकर अपने अधिकार में कर दिया।
- कोटिया भील के कारण इसका नाम कोटा पड़ा।
- माधोसिंह के बाद उसका पुत्र यहां का शासक बना जो औंरगजेब के विरूद्ध धरमत के उत्तराधिकार युद्ध में मारा गया।

झाला जालिमसिंह (1858-1823 ई.)

- कोटा राज्य का मुख्य प्रशासक एवं फौजदार था। वह बड़ा कूटनीतिज्ञ एवं कुशल प्रशासक था। मराठों, अंग्रेजों एवं पिंडारियों से अच्छे संबंध होने के कारण कोटा इनसे बचा रहा। झाला जालसिंह कोटा नरेश किशोर सिंह एवं उम्मेदसिंह के काल के थे। इनके काल में कोटा की वास्तविक शक्ति झाला जालमसिंह के पास में थी।
- झाला जालिमसिंह को **कोटा राज्य का दुर्गादास** कहा जाता है।
- दिसम्बर, 1817 ई. में यहां के फौजदार जालिमसिंह झाला ने कोटा राज्य की और से ईस्ट इंडिया से संधि की।
- इस प्रकार 1838 ई. में झालावाड़ एक स्वतंत्र रियासत बनी। यह राजस्थान में अंग्रेजों द्वारा बनायी गई आखिरी रियासत थी। इसकी राजधानी झालरापाटन बनाई गई।

मारवाड़ का राठौड़ वंश

- स्वतंत्रता पूर्व केवल कश्मीर एवं हैदराबाद सियासत ही जोधपुर सियासत से बड़ी थी।
- राजस्थान के उत्तरी व पश्चिमी भागों में राठौड वंशीय राजपूतों का साम्राज्य स्थापित हुआ जिसे मारवाड़ कहते है।
- राठौड़ का शाब्दिक अर्थ राष्ट्रकूट होता है जो दक्षिण का एक राजवंश है। जोधपुर राठौड़ों का मूल स्थान कन्नौज था।

राव सीहा

- राव सीहां जोधपुर के राठौड़ वंश का संस्थापक था, जो जयचंद गहड़वाल (कन्नौज) का प्रपौत्र था।
- उसने पाली के उत्तर पश्चिम में खेंड में अपना छोटा सा राज्य स्थापित किया।
- सीहा मुसलमानों के विरूद्ध पाली प्रदेश की रक्षा करते हुए 1273 ई. में शहीद हुआ था।

रावचूड़ा

- राव वीरमदेव का पुत्र चूड़ा मारवाड़ का प्रथम बड़ा शासक था।
- उसने मंडोर को मारवाड़ की राजधानी बनाया।
- चुड़ा पुत्री हंसाबाई का विवाह मेवाड़ के राणा लाखा के साथ हुआ जिससे मोकल का जन्म हुआ।
- चुड़ा के पुत्र रणमल की हत्या मेवाड़ के सामन्तों द्वारा धोखे से (सोते हुए चारपाई से बांधकर) सन् 1438 में चित्तौड़ में की गई। एक नगारसी द्वारा रणमल के पुत्र जोधा को चेतावनी दी गयी। जिससे वह बच निकला - जोधा भाग सके तो भाग थारों रिड़मल मारयों जाय'।

राव जोधा (438-88)

- राव जोधा, रणमल का पुत्र था।
- राव जोधा ने मेवाड़ के अक्का सिसोदिया या अहाड़ा हिंगोला को हराकर मंडोर पर पुनः अधिकार किया।
- उसने अपनी पुत्री का विवाह कुम्भा के पुत्र रायमल से कर मेवाड़ मारवाड़ वैमनस्य कम किया।
- जोधा ने सन् 12 मई, 1459 जोधपुर नगर की स्थापना कर अपनी राजधानी बनाया तथा **चिड़ियाटूक पहाड़ी** पर दुर्ग (**मेहरानगढ़**) बनवाया जोधा के पाँचवे पुत्र बीका ने 1465 ई. में **बीकानेर राज्य** की स्थापना की।
- राव जोधा के बाद उसका पुत्र सातलदेव, उसके पश्चात उसका भाई सुजा, सुजा के बाद बाधा तथा बाधा के बाद उसका पुत्र गंगा जोधपुर का शासक बना।
- राव गंगा का राजतिलक बगड़ी के ठाकुर ने तलवार से अपने अंगूठे का चीरा लगाकर रक्त से किया।

राव मालदेव (1532-62 ई.)

- राव मालदेव राव गंगा का बड़ा पुत्र था, जो गंगा की हत्या कर मारवाड़ का शासक बना।
- मारवाड़ की ख्यात के अनुसार मालदेव 52 युद्धों का विजेता था। केवल सुमेल युद्ध में हारे थे।
- मालदेव ने उदयसिंह को मेवाड़ का शासक बनाने में मदद की।
- मालदेव ने 1542 ई. में पोहोबा या साहोबा के युद्ध में बीकानेर के राव जैतसी को हराकर बीकानेर पर कब्जा किया।
- मालदेव की पत्नी उमादे, जो जैसलमेर के रावल लुणकर्ण की पुत्री थी, जिसको रूठीरानी के नाम से जाना जाता था। जिसने तारागढ़ दुर्ग, अजमेर में अपना जीवन गुजारा तथा वह मालदेव की मृत्यु बाद सती हुई।

- शेरशाह सूरी व मालदेव के दो सेनापतियों जैता व कुम्पा के बीच 5 जनवरी, 1544 ई. में गिरी **सुमेल का युद्ध** हुआ जिसमें शेरशाह बड़ी मुश्किल से जीत सका।
- गिरी सुमेल के युद्ध के समय ही शेरशाह के मुख से निकला कि **''मैं मुटठी भर बाजरे के लिए हिन्दुस्तान की बादशाहत खो देता''।**
- **हरमाड़ का युद्ध (1557 ई.)**-जयपुर के पास स्थित हरमाड़ा के मैदान में मालदेव एवं अजमेर के पठान सेनानायक हाजी खां की संयुक्त सेना में मेवाड़ के महाराणा उदयसिंह एवं मेडता जयमल राठौड़ की सेनाओं को हराया। मालदेव में मेडता पर पुनः अधिकार कर लिया।
- राव मालदेव ने पोकरण, मेडता (मालकोट), सोजय, रीयां के किलों का निर्माण करवाया तथा जोधपुर दुर्ग व शहर के परकोटे का निर्माण करवाया।

राव चन्द्रसेन (1562-1581 ई.)

- राव चन्द्रसेन मालदेव का तीसरा पुत्र था चन्द्रसेन को प्रताप का अग्रगामी, भूला विसरा नायक व मारवाड़ का प्रताप कहा जाता है।
- सन् 1570 ई. नागौर दरबार में वह अकबर से मिला था। लेकिन शीघ्र ही उसने नागौर छोड़ दिया।
- चन्द्रसेन पहला राजपूत शासक था जिसने अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की और मरते दम तक संघर्ष किया।
- सोजत परगने में सारण के पास सचियाय नामक स्थान पर चन्द्रसेन का देहान्त हुआ।

राजा उदयसिंह (1583-95 ई.)

- उदयसिंह राव मालदेव का दूसरे नम्बर का पुत्र था। राव उदयसिंह को 'मोटा राजा' के नाम से भी जाना जाता।
- उदयसिंह मारवाड़ के प्रथम शासक थे जिन्होंने अकबर की अधीनता स्वीकार कर वैवाहिक संबंध स्थापित किये।
- उसने अपनी पुत्री जोधाबाई (जगत गुंसाई) उर्फ मानी बाई का विवाह शहजादे सलीम से किया था। जोधपुर की राजकुमारी होने के कारण मानीबाई, जोधाबाई के रूप में प्रसिद्ध हुई।
- उदयसिंह के पुत्र किशनसिंह ने किशनगढ़ राज्य की स्थापना की।
- **सिवाणा** ''मारवाड़ राजाओं कीसंकटकालीन राजधानी'' रही।

सवाई राजा सुरसिंह (1595-1619 ई.)

- उदयसिंह की मृत्यु के पश्चात 1595 ई. में उनके पुत्र सूरसिंह ने जोधपुर का शासन संभाला।
- मुगल सम्राट अकबर ने इन्हें 'सवाई राजा' की उपधि दी।

राजा गजसिंह प्रथम (1619-1638 ई.)

- सूरसिंह के पश्चात उनके पुत्र गजसिंह प्रथम जोधपुर के शासक बने, गजसिंह प्रथम सुरसिंह के पुत्र थे।
- जहांगीर ने इन्हें **'दलथम्मन'** की उपधि दी व इनके घोड़ों को **'शाही दाग'** से मुक्त किया।
- गजसिंह प्रथम की मृत्यु 1638 ई. में आगरा में हुई।

महाराजा जसवंत सिंह प्रथम (1638-78 ई.)

- महाराजा गजसिंह ने अपने जीवन काल में छोटे पुत्र जसवन्त सिंह को उत्तराधिकारी बनाया क्योंकि बड़ा पुत्र अमरसिंह हठी व उदण्ड प्रकृति का था। अमरसिंह का नागौर की जागीर दी गयी।
- जसवन्त सिंह प्रथम की गिनती मारवाड़ के सर्वाधिक प्रतापी राजाओं में होती है।
- शाहजहाँ ने जसवन्त सिंह प्रथम को 'महाराजा' की उपाधि प्रदान की। वे ' महाराजा उपाधि प्राप्त करने वाले जोधपुर के प्रथम शासक थे।
- जसवन्त सिंह ने मुगलों की और से शिवाजी के विरूद्ध भी युद्ध में भाग लिया था तथा शिवाजी के पुत्र शम्भाजी को औरंगजेब के दरबार में बिना शस्त्र के चीते से लड़ाई की थी। बाद में औरंगजेब ने जहरीले वस्त्र पहना कर पृथ्वीसिंह की हत्या करवा दी थी।
- **मुहणौत नेणसी** इन्ही का दरबारी था। जिसने **'नैणसी री ख्यात'** व **'मारवाड़ रा परगना री विगत'** पुस्तक लिखी।
- जसवंत सिंह ने **भाषा-भूषण** व **आनन्द विलास** ग्रंथ लिखे।
- इनकी मृत्यु सन् 1678 ई. में काबुल के पास जामरूद नामक स्थान पर हुई थी। इनकी मृत्यु पर औरंगजेब ने कहा **'आज कुफ्र' (धर्म-विरोध) का दरवाजा टुट गया।**

अजीत सिंह (1708-1724 ई.)

- औरंगजेब ने जसवन्त सिंह की मृत्यु के पश्चात उत्पन्न पुत्र अजीतसिंह को शासक बनाया।
- वीर दुर्गादास राठौड़ ने अजीतसिंह को औरंगजेब के चुंगल से मुक्त कराकर कालिन्द्री (सिरोही) में छिपाकर रखा तथा बाद में मारवाड़ का शासक बनाया।
- बहादुरशाह ने अजीतसिंह को मारवाड़ का शासक स्वीकार किया।
- अजीतसिंह की हत्या के बाद उसका बड़ा पुत्र अभयसिंह राजा बना था।

वीर दुर्गादास राठौड़ (1638-1718 ई.)

- वीर दुर्गादास जसवन्तसिंह प्रथम के मंत्री आसकरण का पुत्र था।
- उसने अजीतसिंह को मुगलों के चंगुल से मुक्त कराया। उसने मेवाड़ व मारवाड़ में संधि करवायी।
- अजीतसिंह ने बहकावे में आकर दुर्गादास को देश निकाला दे दिया तब वे उदयपुर के महाराणा अमरसिंह द्वितीय की सेवा में रहें। महाराणा ने उसको रामपुरा का जगीरदार बनाया।
- दुर्गादास का निधन 1718 ई. में उज्जैन में हुआ और वही उसकी छतरी बनी हुई है।
- ये वीरता एवं स्वामिभक्ति के लिए प्रसिद्ध है।
- कर्नट टॉड ने दुर्गादास को 'राठौड़ का **युलिसीज'** एवं **'राजपुतानें का गेरिबाल्डी'** कहा।
- अमरसिंह जोधपुर के महाराजा गजसिंह प्रथम का बड़ा भाई था। जो नाराज होकर शाहजहाँ की सेवा में चला गया। अमरसिंह को नागौर का शासक बनाया गया।
- सन् 1644 ई. में शाहजहाँ के साले व मीरबक्शी सलावत खाँ को गँवार कहने पर आगरा में भरें दरबार में उसकी हत्या कर दी गई।
- **मतीरे की राड नामक युद्ध 1644 ई.** में अमरसिंह राठौर व बीकानेर के कर्णसिंह के मध्य लड़ा गया। जिसने अमरसिंह की हार हुई। वीरता के कारण उसे आज भी राजस्थान की ख्यालों में स्थान प्राप्त है।

महाराजा अभयसिंह

- महाराजा अजीतसिंह की मृत्यु (1724 ई.) के पश्चात् उसके ज्येष्ठ पुत्र अभयसिंह को शासक बनाया।
- अभयसिंह के काल में सन् 1730 ई. में अमृता देवी के नेतृत्व में खेजड़ली गांव के 363 स्त्री-पुरूषों में वृक्षों को बचाने के लिए अपनी जान न्यौछावर की थी।

- अभयसिंह के बाद उसका पुत्र रामसिंह शासक बना, जो निकम्मा व अयोग्य शासक था। सरदारों ने उसके विरूद्ध विद्रोह कर पितृहन्ता बख्तसिंह को गद्दी पर बिठाया।
- बख्तसिंह की हत्या जयपुर नरेश माधोसिंह प्रथम द्वार धोखे से (जहरीले वस्त्र पहनाकर) करवायी गयी।

महाराजा विजयसिंह

- बख्तसिंह की मृत्यु के बाद 1752 ई. में उसका पुत्र विजयसिंह जोधपुर की गद्दी पर बैठा। उसके काल में मारवाड़ पर मराठा आक्रमण हुआ।
- विजयसिंह काल में राठौर सैनिकों ने धोखे से मराठा सेनापति जयअप्पा सिंधिया की हत्या कर दी। गुलाबराय विजयसिंह की पासवान (उपपत्नी) थी, जिसने जोधपुर शहर में गुलाब सागर तालाब बनवाया।

महाराजा भीवसिंह (भीमसिंह)

- विजयसिंह की मृत्यु के बाद 1739 ई.में उसका पोता भीवसिंह जोधपुर की गद्दी पर बैठा किन्तु दस वर्ष के शासन के पश्चात उसकी मृत्यु हो गई।
- उदयपुर की राजकुमारी की सगाई पहले भीवसिंह के साथ तय की गयी थी किन्तु विवाह से पहले भीवसिंह की मृत्यु हो गई।

महाराजा मानसिंह

- भीवसिंह (भीमसिंह) की मृत्यु के पश्चात मानसिंह शासक बना।
- मानसिंह का जयपुर नरेश जगतसिंह के साथ उदयपुर की राजकुमारी कृष्णाकुमारी के विवाह को लेकर **गिंगोली का युद्ध (1807 ई.)** हुआ जिसने मानसिंह की हार हुई। जगतसिंह का साथ अमीर खाँ पिण्डारी ने दिया था।
- मानसिंह के काल में मारवाड़ में नाथ सम्प्रदाय के साधुओं का प्रभाव अत्यंत बढ़ गया था। आयस देवनाथ मानसिंह का गुरू था। अन्त में पिण्डोरी नेता अमीर खाँ ने देवनाथ की हत्या करवा दी।
- **जोधपुर के महामंदिर** का निर्माण मानसिंह ने अपने गुरू के सम्मानर्थ करवाया था।
- मराठों व मुस्लिम सरदार अमीर खॉ से परेशान होकर मानसिंह को अंग्रेजों से संधि करनी पड़ी (सन् 1818 ई.) यद्यपि मानसिंह अंग्रेज विरोधी थे। मानसिंह के पुत्र छत्रसिंह ने संधि पर हस्ताक्षर किये।
- मेहरानगढ में ''पुस्तक प्रकाश'' नामक ग्रंथालय स्थापित करवाया।
- बांकिदास आसिया मानसिंह के आश्रित कवि एवं उनके काव्य गुंज थे, जिन्हे मारवाड़ का बीरबल कहा जाता है।
- मानसिंह का काल कला एवं साहित्य की दृष्टि से उत्तम काल माना जाता है। स्वंय मानसिंह ने अनेक भजनों की रचना की।
- वर्तमान काल में सबसे अधिक शोध महाराजा मानसिंह पर हुए है।
- मृत्यु के समय मानसिंह नि:सन्तान था, उसके पश्चात महाराजा अजीतसिंह के पड़पोते तख्तसिंह को ईडर (गुजरात) से लाकर जोधपुर का शासक बनाया गया।

महाराजा तख्तसिंह

- तख्तसिंह अंग्रेजों का समर्थन शासक था।
- उनके काल में 1857 ई. का प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम लड़ा गया। तख्तसिंह ने अंग्रेजों की भरपूर सहायता की थी।
- 9 अगस्त, 1857 को जोधपुर किले के बारूद के गोदाम पर बिजली गिरने से लगभग 200 व्यक्ति मारे गये। किले की दीवार व चामुण्डा माता का मंदिर को भारी क्षति पहुंची।
- **मारवाड़ का पहला अंग्रेजी स्कूल छापखाना** तख्तसिंह के समय ही आरम्भ हुआ।

महाराजा जसवन्त सिंह द्वितीय (1875 ई.)

- तख्तसिंह की मृत्यु (1872 ई.) के बाद जसवन्त सिंह गद्दी पर बैठे।
- इनके काल में वायसराय नार्थब्रुक जोधपुर आया (1875 ई.)।
- जसवन्तसिंह का कनिष्ठ भ्राता **सर प्रतापसिंह** राज्य का प्रधानमंत्री बना, जो **आधुनिक जोधपुर का निर्माता** कहलाता है।
- **स्वामी दयानन्द सरस्वती** को कांच पिलाने वाली नन्ही भगतन (नन्हीजान) जसवन्तसिंह द्वितीय की गणिका थी।
- **जसवन्त सागर बाँध (पिचियाक बाँध)** का निर्माण 1889 ई. में उन्ही के द्वारा किया गया।

महाराजा सरदार सिंह

- जसवन्तसिंह द्वितीय के पश्चात उसका पुत्र सरदार सिंह गद्दी पर बैठा (1895 ई.)
- उसके शासन काल में सन् 1899 ई. को मारवाड़ में भयंकर अकाल पड़ा (वि.स. 1956) जो इतिहास में **'छपनिया का अकाल'** नाम से जाना जाता है।
- उन्होंने **गिरदीकोट में घंटाघर** तथा अपने पिता की स्मृति में **जसवन्त थड़ा** बनवाया।

महाराजा सुमेर सिंह

- सरदार सिंह के बाद उसका पुत्र सुमेर सिंह शासक बना।
- उन्होंने प्रथम विश्व युद्ध में अंग्रेजों सेना की तरफ से भाग लिया तथा फ्रांस के मोर्चे पर रहा।
- उनके शासन काल में जोधुपर नगर में बिजली की आपूर्ति आरम्भ (1917 ई.) हुई थी।
- मात्र 21 वर्ष की आयु में सुमेरसिंह की **मलेरिया से मृत्यु** हो गयी थी।

महाराजा उम्मेदसिंह

- सुमेरसिंह के बाद उसका छोटा भाई उम्मेदसिह जोधपुर राज्य को गद्दी पर बैठा।
- महाराजा उम्मेदसिंह ने छीत्तर की पहाड़ी पर एक भव्य और विशाल राजप्रसाद बनवाया (1929-1939 ई.) जो **अब छीत्तर पेलेस या उम्मेद** भवन कहलाता है।
- उनके काल में 1933 ई. मारवाड़ राज्य का नाम बदलकर जोधपुर राज्य कर दिया गया।
- सन् 1936 ई. में लार्ड विलिगंडन जोधपुर आया जिसने सरदार सग्रहालय और समुेर पब्लिक लाइब्रेरी का उद्घाटन किया।
- सन् 1946 ई. को उम्मेदसिंह ने ऐरनपुरा रेल्वे स्टेशन के पास एक विशाल बाँध की नींव रखी जो अब जवाई बाँध के नाम से प्रसिद्ध है तथा वर्तमान में पाली जिले में स्थित है।

महाराजा हनवन्त सिंह

- 9 जून, 1947 को उम्मेदसिंह की मृत्यु हो जाने के पश्चात् उसका पुत्र हनवन्त सिंह उत्तराधिकारी बना।
- हनवन्त सिंह जोधपुर रियासत के अंतिम शासक थे।
- प्रसिद्ध अभिनेत्री जुबैदा हनुवन्त सिंह की पत्नी थी।
- हनवन्त सिंह की मृत्यु सुमेरसिंह के पास विमान दुर्घटना में हुई थी (1952 ई.) यहीं उसकी छतरी निर्मित है। वर्तमान मे पूर्व नरेश गजसिंह द्वितीय हनवन्तसिंह के पुत्र है।

बीकानेर का राठौड़ राजवंश

राव बीका (1488-1504 ई.)

- बीकानेर के राठौड़ वंश का संस्थापक राव जोधा का पांचवा पुत्र बीका था।
- राव बीका ने करणी माता के आशीर्वाद से 1456 ई. में जांगल प्रदेश में राठौड़ वंश की स्थापना की तथा सन् 1488 ई. में नेरा जाट के सहयोग से नगर की स्थापना की।
- राव बीका ने जोधपुर के राजा राव सुजा को पराजित किया तथा राठौड़ वंश के सारे राजकीय चिह्न छीनकर बीकानेर ले गये।

राव लुणकरण (1504-1526 ई.)

- अपने बड़े भाई राव नरा की मृत्यु हो जाने के कारण राव लुणकरण राजा बना।
- राव लुणकरण दानी, धार्मिक प्रजापालक व गुणीजनों का सम्मान करने वाला शासक था।
- दानशीलता के कारण बीठू सूजा ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'राव जैतसी रो छंद में इसे 'कर्ण' अथवा **कलियुग का कर्ण** कहा।
- कर्मचन्द्र वंशोत्कीर्तनक काव्यम् में लुणकरण की दानशीलता की तुलना कर्ण से की गई है।
- सन् 1526 ई. में इसने नारनौल के नवाब पर आक्रमण कर दिया परन्तु **धौंसा नामक स्थान पर हुए युद्ध** में लुणकरण वीरगति को प्राप्त हो गया।

राव जैतसी (1526-1542 ई.)

- लूणकरण के बाद राव जैतसी बीकानेर का शासक बना।
- बाबर के पुत्र कामरान ने 1534 ई. में भटनेर पर अधिकार करके राव जैतसी को अधीनता स्वीकार करने के लिए कहाँ परन्तु जैतसी ने अपनी बड़ी सेना के साथ 26 अक्टूबर, 1534 को अचानक कामरान पर आक्रमण कर दिया और उन्हें गढ़ छोड़ने के लिए बाध्य किया। इस युद्ध का वर्णन **बीठू सूजा** के प्रसिद्ध ग्रन्थ **'राव जैतसी रो छन्द'** में मिलता है।
- राज जैतसी राव मालदेव (मारवाड़) के साथ पाहोबा के युद्ध (1542 ई.) में वीरगति को प्राप्त हुआ।

राव कल्याणमल (1544-1574 ई.)

- 1544 ई. में गिरी सुमेल के युद्ध में शेरशाह सूरी ने मारवाड़ के राव मालदेव को पराजित किया। इस युद्ध में कल्याणमल, ने शेरशाह की सहायता की थी। तथा शेरशाह ने बीकानेर का राज्य राव कल्याणमल को दे दिया।
- कल्याणमल ने नागौर दरबार (1570 ई.) में अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली तथा अपनी पुत्री का विवाह अकबर से किया।
- अकबर ने नागौर दरबार के बाद सन् 1572 ई. में कल्याणमल के पुत्र रायसिंह को जोधपुर की देखरेख हेतु उसे प्रतिनिधि बनाकर जोधपुर भेज दिया।
- कवि पृथ्वीराज राठौड़ (पीथल) कल्याणमल का ही पुत्र था।
- पृथ्वीराज राठौड़ की प्रसिद्ध रचना **'बेलि क्रिसन रूकमणी री'** है। कवि दूसरा आढ़ इस रचना को **'पाँचवा वेद'** एव **'19 वां पुराण'** कहा है। इतालियन कवि **डॉ तेस्सितोरी** ने कवि पृथ्वीराज राठौड़ को **'डिंगल का होरेस'** कहॉ है।
- अकबर ने कवि पृथ्वीराज राठौड़ को गागरोन का किला जागीर में दिया था।

महाराजा रायसिंह (1574-1612 ई.)

- कल्याणमल का उत्तराधिकारी रायसिंह बना जिसे दानशीलता के कारण प्रसिद्ध इतिहासकार मुंशी देवीप्रसाद ने **'राजपुताने का कर्ण'** कहा है।
- बीकानेर का शासक बनते ही रायसिंह ने **'महाराजधिज'** और 'महाराज' की उपाधियां धारण की। बीकानेर के राठौर नरेशों में रायसिह पहला नरेश थाा जिसने इस प्रकार की उपधियां धारण की थी।
- रायसिंह ने शहजादे सलीम (जहाँगीर) को बादशाह बनने में सहायता की जिससे खुश होकर जहाँगीर ने उन्हें 5000 का मनसब प्रदान कर दक्षिण का सुबेदार बनाया।
- रायसिंह मृत्युपर्यन्त मुगल सेवा करता रहा। अपने विरोचित तथा स्वमिभक्ति के गुणों के कारण वह अकबर का विश्वास पात्र बन गया। मानसिंह (आमेर) के बाद सम्मान की दृष्टि से मुगल दरबार में रायसिंह ही आता था।
- मुगल बादशाह अकबर ने रायसिंह को 1572 ई. में जोधपुर का अधिकारी नियुक्त किया था।
- रायसिंह ने अपने मंत्री कर्मचन्द की देखरेख में राव बीका द्वारा बनवाये गये पुराने (जुना) किले पर ही नये किले जुनागढ़ का निर्माण सन् 1594 में पूर्ण करवाया।
- किले के अन्दर रायसिंह ने एक प्रशस्ति भी लिखाई जिसे अब **'रायसिंह प्रशस्ति'** कहते है। किले के मुख्य प्रवेश द्वार सूरजपोल के बाहर जयमल-पता की हाथी पर सवार पाषाण मुर्तियाँ रायसिंह ने ही स्थापित करवाई।
- रायसिंह ने **'रायसिंह महोत्सव'** व **'ज्योतिष रत्नमाला'** ग्रन्थ की रचना की।
- **कर्मचन्द्रवंशोकीर्तनकं** काव्यम में महाराजा रायसिंह को **राजेन्द्र** कहा गया तथा उसमें लिखा गया है कि वह हारे हुए पुत्र शत्रुओं के साथ बड़े सम्मान का व्यवहार करता है।
- रायसिंह की मृत्यु बुरहानुपर (मध्यप्रदेश) में 1612 ई. में हुई थी।

महाराजा कर्णसिंह (1631-1669 ई.)

- सुरसिंह के पुत्र कर्णसिंह को औरंगजेब ने जांगलधर बादशाह की उपाधि प्रदान की (कुछ विद्वानों ने दी थी)
- कर्णसिंह ने दो मुगल शासकों शाहजहाँ व औरंगजेब की सेवा की।
- कर्णसिंह ने विद्वानों के सहयोग से **'साहित्यकल्पद्रुम ग्रन्थ'** की रचना की।
- 1644 ई. में बीकानेर के कर्णसिंह व नागौर के अमरसिंह राठौड़ के बीच **'मतीरा री राड' नामक** युद्ध हुआ। जिसमें कर्णसिंह की विजय हुई।
- इसके आश्रित विद्वान गंगानगर मेथिल ने **'कर्णभूषण एवं काव्यडाकिनी'** नामक ग्रन्थों की रचना की।
- कर्णसिंह ने देशनोक (बीकानेर) में करणी माता के मंदिर का निर्माण करवाया।

महाराजा अनूपसिंह (1669-1698 ई.)

- महाराजा अनूपसिंह द्वारा दक्षिण में मराठों के विरूद्ध की गई कार्यवाहियों से प्रसन्न होकर औरंगजेब ने इन्हें 'महाराजा' एवं 'माही भरातिव' की उपाधि से सम्मानित किया।
- महाराज अनूपसिंह एक प्रकाण्ड विद्वान कूटनीतिज्ञ, विद्यानुरागी एवं संगीत प्रेमी थे। इन्होंने अनेक संस्कृत ग्रन्थों- अनूपविवेक, काम-प्रबोध, अनूपोदय आदि की रचना की। इनके दरबारी विद्वानों ने अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना की थी। इनमें मणिराम कृत 'अनूप व्यवहार सागर एवं अनूपविलास, अनंत भट्ट कृत 'तीर्थ रत्नाकर' तथा संगीताचार्य भावभट्ट द्वारा रचित 'संगीत अनूपांकुश' 'अनूप संगीतर रत्नाकर आदि प्रमुख है।

- **दयालदास** की **'बीकानेर रा राठौडां री ख्यात'** में जोधपुर व बीकानेर के राठौड़ वंश का वर्णन है।

महाराजा सूरतसिंह

- 16 अप्रैल, 1805 को मंगलवार के दिन भाटियों को हराकर इन्होंने भटनेर को बीकानेर राज्य में मिला तथा इन्होंने हनुमानजी के वार मंगलवार को यह जीत हासिल करने के कारण भटनेर का नाम हनुमानगढ़ रख दिया।
- 1818 ई. में बीकानेर के राजा सूरतसिंह ने ईस्ट इंडिया कम्पनी से सुरक्षा संधि कर ली और बीकानेर में शांति व्यवस्था कायम करने में लग गये।

निर्माण कैप्सूल –

- 1857 की क्रांति के समय बीकानेर के महाराजा सरदार सिंह थे जो अंग्रेजों के पक्ष में क्रांतिकारियों का दमन करने के लिए राजस्थान के बाहर पंजाब तक गये।
- बीकानेर के लालसिंह ऐसे व्यक्ति हुए जो स्वंय कभी राजा नहीं बने परन्तु जिसके पुत्र डूंगरसिंह के समय 1886 ई. को राजस्थान में सर्वप्रथम बीकानेर रियासत में **बिजली का शुभारम्भ** हुआ।
- 1927 ई. में बीकानेर के महाराजा गंगासिंह **(आधुनिक भारत का भागीरथ)** राजस्थान में गंगानहर लेकर आये जिसका उद्घाटन वायसराय लॉर्ड इरविन ने किया।
- गंगा सिंह अपनी विख्यात गंगा रियाला सेना के साथ द्वितीय विश्व युद्ध में अंग्रेजों के पक्ष में युद्ध लड़ने के लिये ब्रिटेन गये।
- महाराजा गंगासिंह को 1919 ई. **वर्साय शांति सम्मेलन (पेरिस)** में एक पूर्ण सत्ता सम्पन्न प्रतिनिधि बनाया।
- 1921 ई. में गठित नरेन्द्र मण्डल (चेम्बर ऑफ प्रिंसेज) के **प्रथम चांलसर महाराजा गंगासिंह** थे।
- **महाराजा गंगासिंह ने लंदन में आयोजित प्रथम गोलमेज** सम्मेलन (1930 ई.) में भाग लिया था।

कच्छवाह वंश

दूलहराय (तेजकरण)

- ढूढ़ाड़ में कछवाह राज्य का संस्थापक था, जो नरवर(ग्वालियर) के शासक सोढ़ासिंह के पुत्र था।
- 1137 ई. में दुलहराय ने दौसा के बड़गूजरों को हराकर नवीन ढूँढ़ाड़ राज्य की स्थापना की तथा दौसा को अपनी राजधानी बनाया।
- रामगढ़ में उसने कुलदेवी जमुवाय माता का मंदिर बनवाया।

कोकिलदेव

- दुलहराय के पौत्र कोकिलदेव ने 1207 ई. में मीणों से आमेर जीतकर अपनी राजधानी बनाया, जो 1722 ई. तक कछवाह वंश की राजधानी रहा।
- इसी वंश का पृथ्वीराज मेवाड़ के राणा सांगा का सामान्त था, जो खानवा के युद्ध में सांगा इसी वंश का शेखां, सांगा को घायलावस्था में बसवा (दौसा) लाया था। उसने शेखावटी ने अपना अलग राज्य बनाया।
- पृथ्वीराज के पुत्र सांगा ने सांगानेर बसाया था।

राजा भारमंल या बिहारीमल (1547-1574 ई.)

- भारमल, भीमदेव का पुत्र था जो 1547 ई. में आमेर का शासक बना।
- भारमल प्रथम राजस्थानी शासक था, जिसने अकबर की अधीनता स्वीकार की तथा 1562 ई. में अपनी पुत्री हरखाबाई उर्फ मानमति या शाही बाई (मरियम उज्जमानी) का विवाह अकबर से किया।
- भारमल को अधीनता स्वीकार कराने में चगताई खाँ ने मदद की थी।
- भारमल के सहयोग से ही अकबर ने 1570 ई. में **'नागौर दरबार'** का आयोजन किया।
- अकबर ने भारमल को 'राजा व **'आमीर-उल-उमरा'** की उपाधि प्रदान की।
- मुगल बादशाह जहाँगीर हरखाबाई का ही पुत्र था।

राजा भगवन्त दास (1574-1589 ई.)

- भगवन्त दास या भगवान दास भारमल का पुत्र था।
- उसने अपने पुत्री मानबाई या मनभावनी का विवाह शहजादे सलीम (जहाँगीर) से किया। मानबाई को **'सुल्तान-ए निस्सा'** की उपाधि प्राप्त थी। शहजादा खुसरों इसी मानबाई का पुत्र था।
- भगवानदास अकबर ने नवरत्नों में शामिल था।
- भगवानदास की मृत्यु-लाहौर में हुई।

राजा मानसिंह (1589-1614 ई.)

- मानसिंह भगवन्तदास का दत्तक पुत्र था, जिसका राज्याभिषेक 14 फरवरी, 1590 ई. को किया गया।
- मानसिंह आमेर के शासकों में सर्वाधिक प्रतापी एवं महान राजा था।
- मानसिंह ने 52 वर्ष तक मुगलों की सेवा की। मानसिंह अकबर द्वारा **प्रथम पंचहजारी हिन्दू मनसबदार** बना। 1573 ई. में वह अकबर के दूत के रूप में राणा प्रताप से मिला था।
- 1576 ई. में हल्दीघाटी के युद्ध ने उसने शाही सेना का नेतृत्व किया था, वह गोगुन्दा के आगे नहीं बढ़ा था इस अभियान के बाद वह दिल्ली लौटा तो अकबर ने कुछ समय के लिए दरबार प्रवेश (डयोडी) पर रोक लगा दी।
- अकबर ने उसे फर्जन्द (पुत्र) एवं राजा की उपाधि प्रदान की। वह अकबर के नवरत्नों में शामिल था।
- वह काबुल, बंगाल एवं बिहार का गवर्नर रहा।
- मानसिंह स्वयं कवि विद्वान, साहित्य प्रेमी व विद्वानों का आश्रयदाता रहा।
- संगीतकार पुण्डरिक विट्ठल इनके भाई माधोसिंह के आश्रय में था। जिसने रागमंजरी, रागचन्द्रोदय व नर्तन निर्णय ग्रन्थ लिखे।
- मानसिंह ने मानपुर (बिहार) व अकबर नगर या राजमहल (बंगाल) नामक दो नये नगर बसाये।
- मानसिंह ने बंगाल के राजा कैदार को हराकर वहाँ से शीलादेवी की मूर्ति आमेर स्थापित करवायी।
- शीलादेवी मंदिर (आमेर), जगत शिरोमणी मंदिर (कृष्ण मंदिर)(आमेर) तथा राधा गोविन्द मंदिर (वृंदावन) उसी ने बनवाये थे।
- जगत शिरोमणी मंदिर (कृष्ण मंदिर) (आमेर), उसने अपने पुत्र जगतसिंह की याद में बनवाया था।
- इनकी मृत्यु **इलिचपुर** दक्षिण भारत में 1614 ई. में हुई थी।
- मानसिंह की मृत्यु के बाद उसका पुत्र भावसिंह शासक बना (1614-1667 ई.)।

महाराजा जयसिंह प्रथम उर्फ मिर्जा राजा जयसिंह

- शासक बनने के समय जयसिंह **(1621-1667 ई.)** की आयु मात्र 11 वर्ष थी।
- इसने तीन मुगल बादशाहों जहाँगीर, शाहजहाँ व औरंगजेब को अपनी सेवाएँ दी।

- उसने औरंगजेब की तरफ से शिवाजी को संधि के लिए बाध्य किया यह संधि इतिहास में 'पुरन्दर की संधि' (11 जून, 1665) के नाम से प्रसिद्ध है।
- उसकी योग्यता एवं सेवाओं से प्रसन्न होकर शाहजहाँ ने उसे **'मिर्जाराजा'** की उपाधि प्रदान की।
- उसने **जयगढ़ दुर्ग** का निर्माण करवाया तथा यहाँ तोप बनाने का कारखाना स्थापित करवाया था।
- बिहारी सतसई के रचयिता कवि बिहारी उसके दरबार में रहता था।
- बिहारी का भानजा कुलपति मिश्र भी बड़ा विद्वान था जिसने 52 ग्रन्थों की रचना की वह जयसिंह का दरबारी था।
- मिर्जा राजा जयसिंह के एक अन्य दरबारी रामकवि ने 'जयसिंह चरित्र' की रचना की।
- इनकी मृत्यु बुरहानुपर के पास हुई थी। (ऐसा भी कहा जाता है कि औरंगजेब ने उसको मरवा डाला)
- मिर्जाराजा जयसिंह के बाद उसके उत्तराधिकारी रामसिंह, बिशनसिंह और सवाई जयसिंह आमेर की गददी पर बैठा।

महाराजा जयसिंह द्वितीय या सवाई जयसिंह

- इनका वास्तविक नाम विजयसिंह **(1700-1743ई.)** था जो विशनसिंह का पुत्र था।
- जयसिंह ने मारवाड़ के अजीतसिंह व मेवाड़ के अमरसिंह द्वितीय के साथ मिलकर मुगल शक्ति के विरूद्ध लड़ने की योजना। **(देबारी समझौता)** बनायी और आमेर पुनः प्राप्त कर लिया।
- सवाई जयसिंह ने मुगलों के लिए तीन बार मराठों से युद्ध किये। **पिलसूद के युद्ध** (1715 ई.) में मराठों पर विजय मिली किन्तु **मंदसौर के युद्ध** (1733 ई.) में हारे।
- सवाई जयसिंह द्वारा जाटों पर मुगलों की विजय होने के उपलक्ष में बादशाह मुहम्मद शाह ने जयसिंह को 'राज राजेश्वर, श्री राजाधिराज' सवाई की उपाधि प्रदान की।
- सवाई जयसिंह ने मेवाड़ के महाराणा जगतसिंह द्वितीय के साथ मिलकर 17 जुलाई, 1734 ई. में **हुरड़ा (भीलवाड़ा)** में राजस्थान के राजपूत राजाओं का सम्मलेन आयोजित किया जिसका उद्देश्य सामूहिक शक्ति द्वारा मराठा आक्रमण को रोकना था। हुरड़ सम्मेलन में भाग लेने वाले अन्य शासक अभयसिंह (जोधपुर), बख्तसिंह(नागौर), दुर्जनसाल (कोटा), जोरावरसिंह (बीकानेर), दलेलसिंह (बूंदी) आदि थे।
- ये संस्कृत फारसी, गणित एवं ज्योतिष का प्रकाण्ड विद्वान थे। उन्हें ज्योतिष शासक भी कहा गया।
- उसने 'सम्राट सिद्धान्त' 'सिद्धान्त कौस्तुभ' ग्रन्थ तथा 'जयसिंह कारिका' नामक ज्योतिष ग्रन्थ की रचना भी की।
- ज्योतिष ग्रन्थ **'जीज-ए-मुहम्मदशाही'** लिखवाया।
- उसने जयपुर, दिल्ली, बनारस, उज्जैन व मथुरा में वेध शालाएं (ग्रह-नक्षत्र शालाएं)। जिसमें सबसे बड़ी वेधशालाएं
- (जंतर-मंतर) जयपुर की (यूनेस्कों की सूची में शामिल) है। तथा सबसे पहली वैधशाला दिल्ली की है।
- उन्होंने ये वैध शालाएं पुर्तगाल के ज्योतिष **जोवियर-डी-सिल्वा** की गणना के आधार पर बनवायी।
- उसने 18 नवमब्र, 1727 ई. में जयपुर (नगर) की स्थापना की। जयपुर शहर की नींव राजगुरू पं जगन्नाथ द्वारा रखी गयी थी। इसका प्रधान वास्तुकार बंगाली **ब्राह्मण विद्याधर भट्टाचार्य** था। जयुपर की स्थापना सिन्धु घाटी सभ्यता के नगरों के तंज पर की गयी।
- जयसिंह ने **नाहरगढ़ दुर्ग (सुदर्शनगढ़)** का निर्माण शुरू करवाया तथा इसमें जयनिवास महल का निर्माण भी करवाया।
- नाहरगढ़ दुर्ग में माधोसिंह द्वितीय ने एक जैसे नौ महल बनवाये।
- उसने चन्द्रमहल (सिटीपैलेस) एवं जलमहल का निर्माण करवाया।
- सवाई जयसिंह के समय ही आमेर राज्य का सर्वाधिकार विस्तार हुआ।
- वह अंतिम हिन्दु शासक था जिसने 1740 ई. में अश्वमेघ यज्ञ का आयोजन करवाया जिसका पुरोहित **पुण्डरिक रत्नाकर** था।
- पुण्डरिक रत्नाकर ने 'जयसिंह कल्पद्रुम' ग्रन्थ की रचना की

महाराजा सवाई ईश्वरीय सिंह (1743-50 ई.)

- सवाई जयसिंह के बड़े पुत्र थे।
- उनके छोटे भाई माधोसिंह प्रथम ने मराठों व कोटा, बूंदी से मिलकर 1747 ई. में उन पर आक्रमण में त्रिपोलिया बाजार जयपुर में ईसरलाट (सरगासूली) का निर्माण करवाया गया।
- राजमहन का युद्ध 1778 ई. में बगरू के युद्ध में माधोसिंह से हारे।
- 1750 में मराठा मल्हारराव का आक्रमण हुआ तब भारी चौथ की मांग से परेशान होकर आत्महत्या कर ली।

महाराजा सवाई माधोसिंह प्रथम (1750-1768 ई.)

- इनके काल में मराठा हस्तक्षेप से क्रुद्ध जयपुर के नागरिकों ने मराठा सैनिकों का कत्लेआम किया।
- 1763 ई. में सवाई माधोपुर नगर बसाया।
- जयपुर के **मोती डूंगरी महलों का निर्माण** भी इन्होंने करवाया था।
- **भटवाड़ का युद्ध (1761ई.)**-जब मुगल बादशाह अहमदशाह ने रणथम्भौर दुर्ग माधोसिंह को दे दिया तो कोटा महराव नाराज हो गया। उसने जयपुर पर आक्रमण कर दिया और जयपुर की सेना को हराया। रणथम्भौर पर पुनः कोटा का अधिकार हो गया।
- सवाई माधोसिंह प्रथम पश्चात पृथ्वीसिंह तथा उसके बाद 1778 ई. में प्रतापसिंह शासक बने।

महाराजा सवाई प्रतापसिंह (1778-1803 ई.)

- इनके काल में अंग्रेज सेनापति जार्ज थॉमस का आक्रमण हुआ।
- प्रतापसिंह ने जोधपुर के विजयसिंह के साथ मिलकर तुंगा के **युद्ध (1787ई.)** में मराठा सेनापति महादजी सिंधिया को बूरी तरह हराया था, किन्तु **पाटन के युद्ध** (1790 ई.) में प्रतापसिंह को सिंधिया से हार का मुँह देखना पड़ा।
- प्रतापसिंह स्वंय ब्रजनिधि नाम से काव्य रचना करते थे।
- **'ब्रजनिधि ग्रन्थावली'** इनकी रचनाओं का संग्रह है। इन्होंने जयपुर में एक संगीत सम्मेलन करवाकर राधा गोविन्द संगीत सार की रचना करवायी। इसके रचियता देवर्षि भटट ब्रजपाल थे।
- इन्होंने हवा महल का निर्माण 1799 ई. में करवाया।
- सवाई प्रतापसिंह के दरबार में बाइस (22) प्रसिद्ध संगीतज्ञों एवं विद्वानों की मण्डली **'गधर्व बाइसी'** थी। इनमें देवर्षि भटट ब्रजपाल, उस्ताद चाँद खाँ (जो प्रतापसिंह के संगीत गुरू थे), गणपति भारती (जो प्रतापसिंह के काव्य गुरू थे) तथा द्वारकादास प्रमुख थे।

महाराजा सवाई जगतसिंह द्वितीय (1803-18 ई.)

- सवाई जगतसिंह ने राजकुमारी कृष्णा कुमारी को लेकर (1807 ई. में) जोधपुर के मानसिंह से युद्ध किया तथा जोधपुर की सेना को गिंगोली (नागौर) में हराया।
- सन् 1818 ई. में मराठा आतंक से मुक्ति हेतु कम्पनी से संधि करली।
- जगतसिंह की मृत्यु के पश्चात् सन 1818 ई. में उसका नाबालिग पुत्र जयसिंह तृतीय सन् 1835 ई. तक शासक रहा।

महाराजा रामसिंह द्वितीय (1835-80 ई.)

- रामसिंह द्वितीय नाबालिग होने के कारण ब्रिटिश संरक्षण स्थापित हुआ। 1843 ई. में प्रशासक जॉन लुडलों ने प्रशासन चलाया। उसने सतीप्रथा, दास प्रथा, दहेज प्रथा व कन्या वध पर रोक लगायी।
- 1857 ई. के विद्रोह में सहायता के उपलक्ष में उन्हें **'सितारे हिन्द'** उपाधि प्रदान की गयी।
- सन् 1870 ई. में लार्ड मेयो, 1875 ई. में लार्डनार्थ ब्रुक, 1876 ई. में प्रिंस ऑफ वेल्स अल्बर्ट ने जयपुर यात्र की।
- रामसिंह द्वितीय ने जयपुर में कला संस्थान **'मदरसा हूनरी' (महाराजा स्कूल ऑ आर्ट)** अथवा **'तस्वीरों रो कारखानों'** की स्थापना करवायी।
- अल्बर्ट की यात्रा की स्मृति में जयपुर में **अल्बर्ट हॉल** म्यूजियम का शिलान्यास करवाया ।
- 1869 ई. में महाराजा रामसिंह को वायसराय की विधान परिषद का सदस्य बनाया गया।
- रामसिंह द्वितीय के आदेश से **जयपुर को गुलाबी रंग** से रंगवाया जबकि वास्तव में यह रंग गेरू है।

महाराजा माधोसिंह द्वितीय (1880-1922 ई.)

- माधोसिंह द्वितीय रामसिंह का दत्तक पुत्र था।
- वे 1902 ई. में ब्रिटिश सम्राट एडवर्ड सप्तम के राज्याभिषेक समारोह में इंग्लैण्ड गये।
- इन्होंने बनारस हिन्दू विश्व विद्यालय के लिए 5 लाख रूपये का सहयोग पं. मदनमोहन मालवीया को भेंट किया।
- नाहरगढ़ में इन्होंने एक जैसे नो महल बनवाये।
- उनकी मृत्यु के बाद उनके दत्तक पुत्र मानसिंह द्वितीय गददी पर बैठा।

महाराजा मानसिंह द्वितीय (1922-72 ई.)

- मानसिंह द्वितीय स्वतंत्रता प्राप्ति के समय जयपुर के शासक थे। वे **राजस्थान के प्रथम राजप्रमुख** थे।
- इनके प्रधानमंत्री **मिर्जा इस्माइल** को **आधुनिक जयपुर का निर्माता** कहा जाता है।
- महारानी गायत्री देवी उनकी पत्नी थी, जो राजस्थान से 1962 ई. के चुनाव में जयपुर सीट से लोकसभा की प्रथम महिला सदस्य बनी थी। (स्वतंत्रता पार्टी)
- मानसिंह द्वितीय की मृत्यु 1972 ई. में लंदन में पोलो खेलते समय हुई।

यादव वंश

जैसलमेर का भाटी राजवंश

- जैसलमेर में भाटी वंश का शासन था जो स्वंय को चन्द्रवंशी यादव एवं श्री कृष्ण के वंशज मानते हैं।
- भाटी शासकों की प्रारम्भिक राजधानियॉ- गजनी, लाहौर, भटनेर, देरावर व लोद्रवा रही थी।
- यदुवंशी बालद के पुत्र भट्टी ने 285 ई. भेटनेर (हनुमानगढ़) के किले का निर्माण कर वहॉ अपना राज्य स्थापित किया। इसके वंशज भाटी कहलाने लगे। भाटी वंश को 'उत्तर भड़ किवाड' का विरूद्ध प्राप्त था।
- भाटियों का व्यवस्थित इतिहास विजयराम से प्रारम्भ होता है।
- उसके बाद भौज व जैसल शासक बने।
- 1155 ई. में रावल जैसलदेव भाटी ने जैसलमेर दुर्ग का निर्माण करवाया तथा अपनी राजधानी लोद्रवा से जैसलमेर स्थानान्तरित की। (जैसलमेर दुर्ग **ढाई साको** के लिये जाना जाता है)
- जैसलमेर के उत्तराधिकारी शालिवान ने दुर्ग का निर्माण पूर्ण करवाया।
- यहाँ के परवर्ती शासक हरराय ने अकबर के नागौर दरबार में मुगल अधीनता स्वीकार कर अपनी पुत्री का विवाह अकबर से 1570 ई. में किया।
- औरंगजेब के समय यहाँ का शासन महारावल अमरसिंह के हाथो में था जो **'अमरकास'** नाला बनाकर सिंधु नदी का पानी अपने राज्य में लाया।
- 1818 ई. में यहॉ के शासक मूलराज II ने ईस्ट इंडिया कम्पनी में संधि कर राज्य की सुरक्षा का जिम्मा अंग्रेजों को दे दिया। जैसलमेर राज्य की कम्पनी को रिश्वत देने से मुक्त रखा गया था।
- यहॉ के अंतिम शासक जवाहरसिंह के काल में प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी **सागरमल गोपा** को जेल में अमानवीय यातनाएँ देकर 3 अप्रैल 1946 ई. को जलाकर मार डाला।
- 30 मार्च 1949 को जैसलमेर रियासत का राजस्थान में विलय हो गया।

करौली राज्य का यादव वंश

- राजस्थान में यादवों की दो रियासतें थी-पहला जैसलमेर व दूसरी करौली।
- प्राचीनकाल में इस रियासत का कुछ भाग मत्स्य जनपद में तथा कुछ भाग शूरसेन जनपद में आता था।
- करौली में यादव वंश के शासक की स्थापना विजयपाल यादव द्वारा 1040 ई. में की गई। यहाँ के शासन तिमनपाल ने **तिमनगढ़ दुर्ग** का निर्माण करवाया।
- 1327 ई. अर्जुनपाल यादव ने तिमनगढ़ मुस्लिमों से छीनकर यहाँ पुन: यादवों का शासन स्थापित किया। उसने 1348 ई. में कल्याणपुर नगर बसाया जो अब करौली के नाम से जाना जाता है।
- 1605 ई. में धर्मपाल द्वितीय ने करौली को अपनी राजधानी बनाया।
- 15 नवम्बर, 1817 ई. में करौली नरेश हरवक्षपाल ने ब्रिटिश सरकार की अधीनस्थ मैत्री संधि कर ली तथा करौली अंग्रेजों के संरक्षण में आ गया। लार्ड हेस्टिंग्स की इस नीति के तहत संधि कर ली तथा अंग्रेजों के संरक्षण में आ गया। लार्ड हेस्टिंग्स की इस नीति के तहत संधि करने वाला करौली राजस्थान का प्रथम राज्य था।
- सन1857 ई. के स्वतंत्रता आन्दोलन में कोटा नरेश को स्वतंत्रता सेनारियों के कब्जे से मुक्त कराने हेतु करौली राज्य की सेना भेजी गई थी। इस समय करौली के शासक मदनपाल थे।
- स्वतंत्रता के बाद करौली रियासत मत्स्य संघ में मिल गई जो अंतत: राजस्थान का हिस्सा बनी। उसके बाद उसको सवाई माधोपुर जिले में शामिल किया गया।
- स्वतंत्रता के समय यहाँ के शासक गणेशपाल थे।

भरतपुर राज्य का जाट वंश

- भरतपुर राज्य की स्थापना सिनसिनी गाँव के जाटों ने की थी। उनका पुत्र सिनसिनवार था।
- राजस्थान के पूर्वी भाग- भरतपुर, धोलपुर, डीग आदि क्षेत्रों पर जाट वंश का शासन था। यहाँ जाट शक्ति का उदय औरंगजेब के शासन काल से हुआ था।
- औरंगजेब के काल में गोकुल, भज्जा व राजाराम के नेतृत्व में जाट संगठित होने लगे।
- औरंगजेब की मृत्यु, के आसपास जाट सरदार चूड़ामन ने थून (आगरा के पास) में किला बनाकर अपना राज्य स्थापित कर लिया था।
- बहादुरशाह ने चूड़ामन को 1500 जात व 500 सवारों का मनसबरदार बनाया।
- चूड़ामन के बाद उसके भतीजे बदनसिंह को जयपुर नरेश सवाई जयसिंह ने 1722 ई. में डीग की जागीर दी एवं **'ब्रजराज'** की उपाधि प्रदान की । इस प्रकार एक नये जाट राज्य का गठन हुआ।
- बदनसिंह ने डीग, कुम्हेर, भरतपुर तथा वैर में किले बनवाये।
- बदनसिंह के पुत्र सूरजमल ने सोधर के निकट दुर्ग का निर्माण करवाया, जो बाद में **भरतपुर के दुर्ग** या **लोहगढ़** के नाम से प्रसिद्ध हुआ। बदनसिंह ने उसे अपनी राजधानी बनाया। बीस वर्ष शासन के पश्चात इसने जीते जी अपने पुत्र सूरजमल को शासन की बागडोर सौंप दी। 1736 ई. को बदनसिंह की मृत्यु हो गयी।
- **सूरजमल** को **'जाटों का प्लेटों** (अफलातून) या **'सिनसिनवार प्लेटो'** कहा जाता है।
- सूरजमल ने डीग के महलों का निर्माण करवाया। सूरजमल ने 12 जून, 1761 ई. को आगरे के किले पर अधिकार कर लिया।
- सूरजमल 1763 ई. में नजीब खाँ रोहिला के विरूद्ध हुए युद्ध में मारा गया।
- सूरजमल के शासन में अहमदशाह अब्दाली ने भारत पर आक्रमण किया। पानीपत के तृतीय युद्ध (1761ई.) में बचे हुए मराठी सैनिकों को सूरजमल व उसकी महारानी किशोरी देवी ने रसद सामग्री उपलब्ध कराई।
- सूरजमल के बाद उसका पुत्र जवाहरसिंह भरतपुर का राजा बना। उसने दिल्ली पर आक्रमण किया तथा विजय के उपलक्ष में लाल किले के दरवाजे को भरतपुर लेकर आया। इसने विदेशी लड़कों की एक पेशेवर सेना तैयार की।
- अब्दाली के भारत से लौटने के बाद क्रमशः रतनसिंह, केशरसिंह व रणजीतसिंह शासक बने।
- रणजीतसिंह के काल में मराठों व अंग्रेजों का आक्रमण हुआ।
- 1805 ई. में अंग्रेज जनरल **लेक डाउन वेल** ने भरतपुर दुर्ग को घेर लिया किन्तु उसे जीत न सका।
- 29 सितम्बर, 1803 ई. में रणजीतसिंह ने अंग्रेजों से सर्वप्रथम सहायक संधि कर ली।
- महाराजा ब्रजेन्द्रसिंह आजादी के समय भरतपुर के शासक थे।
- स्वतंत्रता के बाद भरतपुर, मत्स्य संघ में विलय हुआ जो 1949 ई. में राजस्थान में शामिल हो गया।

प्रमुख नगर	समय	संस्थापक
चित्तौड़ गढ़	734 ई.	चित्रांगद मौर्य
अलवर	1103 ई.	अलघुराय
अजमेर	1113 ई.	अजयपाल
जैसलमेर	1155 ई.	रावजैसल भाटी
बून्दी	1242 ई.	हाडाराव देवा
बाड़मेर	1246 ई.	बाहड़देव
करौली	1348 ई.	राव अर्जुनदेव
सिरोही	1425 ई.	महाराव सहसमल
जोधपुर	1459 ई.	रावजोधा
बीकानेर	1488 ई.	राव बीका
उदयपुर	1559 ई.	उदयसिंह
किशनगढ़	1609 ई.	किशनसिंह
जयपुर	1727 ई.	सवाई जयसिंह
भरतपुर	1733 ई.	राजा सूरजमल
गंगानगर	1927 ई.	गंगासिंह

राजस्थान के महत्वपूर्ण युद्ध

हल्दीघाटी का युद्ध - 21 जून 1576 ई.
- खमनौर की पहाड़ियों में स्थित हल्दीघाटी के मैदान में। महाराणा प्रताप तथा मानसिंह व आसफ खान के बीच (अकबर)।

सारंगपुर का युद्ध - 1437
- महाराणा कुम्भा तथा मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी के बीच इस युद्ध में महाराणा कुम्भा विजय हुए तथा इसके उपलक्ष्य में चित्तौड़गढ़ दुर्ग में विजय स्तम्भ का निर्माण करवाया।

खातौली का युद्ध - 1517-18
- मेवाड़ के महाराणा सांगा तथा दिल्ली के सम्राट इब्राहिम लोदी के बीच।
- कोटा के निकट स्थित (खातौली) नामक स्थान पर हुए युद्ध में राणा सांगा की विजय हुई।

बाड़ी का युद्ध - 1518 (धौलपुर)
- महाराणा सांगा तथा दिल्ली सुल्तान इब्राहिम लोदी के बीच।
- इस युद्ध में राणा सांगा के विजय हुई।

गागरोण का युद्ध - 1519 (झालावाड़)
- मेवाड़ के महाराणा सांगा तथा मांडु के सुल्तान महमूद खिलजी द्वितीय के बीच।
- इस युद्ध में राणा सांगा की विजय हुई तथा मोहम्मद खिलजी को कैद कर लिया गया।
- इस युद्ध में राणा सांगा की पराजय तथा भारत में मुगल साम्राज्य की नीवं मजबूत हुई।

खानवा का युद्ध- 17 मार्च 1527 (रूपवास-भरतपुर)
- मेवाड़ के महाराणा सांगा तथा दिल्ली के बादशाह के बीच।

दिवेर का युद्ध - 1582
- महाराणा प्रताप तथा सुल्तान खां के नेतृत्व में मुगल सेना के बीच।
- इस युद्ध में महाराणा प्रताप की विजय हुई।
- इस युद्ध को कर्नट जेम्स टॉड ने **मेवाड़ का मैराथन** कहा था।

गींगोली का युद्ध - 1807 (परबतसर - नागौर)
- मेवाड़ राजकुमारी कृष्णाकुमारी से विवाह को लेकर जोधपुर के महाराणा मानसिंह तथा जयपुर के महाराजा जगतसिंह के बीच।
- जिसमें जोधपुर की हार हुई

तराइन का प्रथम युद्ध-1191 (हरियाणा)
- मोहम्मद गौरी व पृथ्वीराज चौहान तृतीय मध्य।
- इस युद्ध में मोहम्मद गौरी की हार हुई थी।

तराइन का द्वितीय युद्ध-1192 (हरियाणा)
- मोहम्मद गौरी व पृथ्वीराज चौहान तृतीय मध्य।

तराइन का द्वितीय युद्ध-1192 (हरियाणा)
- मोहम्मद गौरी तथा पृथ्वीराज चौहान तृतीय के मध्य।
- इसमें पृथ्वीराज चौहान तृतीय पराजित हुआ।

अजमेर का युद्ध - 1135
- चौहान शासक अर्णोराज तथा तुर्कों के मध्य।
- इस युद्ध में तुर्कों की पराजय हुई थी।

आबू का युद्ध- 1178
- गुजरात के शासक मूलराज द्वितीय तथा मोहम्मद गौरी के मध्य इस युद्ध में मोहम्मद गौरी की पराजय हुई।

भूताला/नागदा का युद्ध - 1234 (उदयपुर)
- मेवाड़ के महाराणा जैत्र सिंह तथा दिल्ली के सुल्तान इल्तुतमिश के मध्य।
- इस युद्ध में इल्तुतमिश को जैत्रसिंह ने हराया तथा चित्तौड़ को मेवाड़ की राजधानी बनाया।

रणथंभौर का युद्ध - 1301 (सवाई माधोपुर)
- रणथभौर के चौहान शासक हमीरदेव तथा दिल्ली सुल्तान अलाउददीन खिलजी के मध्य।
- इस युद्ध में रणमल व रतिपाल के विश्वासघात के कारण हमीर देव वीरगति को प्राप्त हुए तथा महाराणी रंगदेवी ने जल जौहर किया।

चित्तौड़गढ़ का युद्ध- 1303
- मेवाड़ के महाराजा रतनसिंह तथा दिल्ली सुल्तान अलाउददीन खिलजी के मध्य।
- इस युद्ध में महाराणा रतनसिंह सहित सैकड़ों सैनिक मारे गये तथा महाराणी पद्मिनी ने अनेक वीरांगनाओं के साथ जौहर किया।

सिवाणा का युद्ध- 1308 (जालौर)
- सिवाणा के शासक शीतलदेव परमार तथा दिल्ली सुल्तान अलाउददीन खिलजी के मध्य।
- शीतलदेव परमार वीरगति को प्राप्त हुए।

जालौर का युद्ध - 1311-12
- जालौर के शासक कान्हड़देव तथा दिल्ली सुल्तान अलाउददीन खिलजी के मध्य।
- इस युद्ध में अनेक राजपूत योद्धाओं के साथ कान्हड़देव वीरगति को प्राप्त हुआ तथा राणियों ने जाहौर किया।

कोसाणा का युद्ध - 1492 (भरतपुर)
- मारवाड़ के राव शीतलदेव तथा अजमेर के सूबेदार मल्लू खाँ के मध्य।
- इस युद्ध में मल्लू खां पराजित हुआ तथा उसका सेनापति गुड़ले खां मारा गया।
- इसी उपलक्ष में मारवाड़ में घुड़ले का त्यौहार मनाया जाता है। (चैत्र कृष्ण अष्टमी)।

पहोबा का युद्ध - 1541
- बीकानेर शासक राव जैतसी तथा मारवाड़ शासक मालदेव के मध्य।
- इस युद्ध में राव जैतसी मारा गया तथा मालदेव की विजय हुई।

गिरी सुमैल/ जैतारण का युद्ध - 1544
- मारवाड़ के शासक मालदेव के सेनानायक जैता- कुपा तथा दिल्ली सुल्तान शेरशाह के मध्य।
- इस युद्ध में बड़ी मुश्किल से जीतने के बाद शूरी ने कहा था- ''मै एक मुटठी, बाजार के लिए पूरे हिन्दुस्तान की बादशाहत को खो देता''।

चित्तौड़गढ़ का युद्ध - 1567-68
- मेवाड़ के महाराणा उदयसिंह के सेनानायक जयमल राठौड़ व फत्ता सिसोदिया बादशाह अकबर के मध्य।
- जयमल तथा फत्ता शहीद हुए तथा मेवाड़ की वीरांगनाओं ने जौहर किया। **मेवाड़ का तीसरा साका** हुआ।

मतीरे का राड़ युद्ध - 1644 (नागौर)
- नागौर के अमरसिंह राठौड़ तथा बीकानेर महाराणा करणसिंह के मध्य।

महोबा का युद्ध - 1182
- चंदेल शासक परमर्दिदेव तथा पृथ्वी चौहान तृतीय के मध्य।
- इस युद्ध में परमर्दिदेव के सेनानायक शहीद हुए तथा पृथ्वी राज चौहान तृतीय विजयी रहे।

दौराई का युद्ध - 1659 (अजमेर)
- औरंगजेब तथा द्वारा शिकों के मध्य। औरंगजेब की विजय हुई।

कामा का युद्ध (भरतपुर)
- जयपुर के शासक माधोसिंह तथा भरतपुर शासक जवाहरसिंह के मध्य।
- इस युद्ध में माधोसिंह की विजय हुई।

तुगा का युद्ध - 1787 (दौसा)
- जयपुर तथा जोधपुर राज्यों द्वारा मराठों के विरूद्ध, महादजी सिंधिया की हार।

भटनेर का युद्ध - 1805 (हनुमानगढ़)
- भटनेर तथा बीकानेर के राठौड़ों के मध्य हुआ। जिसमें राठौड़ विजयी रहे।

महत्वपूर्ण व्यक्तियों के प्रसिद्ध उपनाम

- ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती (अजमेर)	- गरीब नवाज
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय	- राय पिथोरा
- ह्वेनसांग (चीनी यात्री)	- तीर्थ यात्रियों का राजकुमार
- बाप्पा रावल (कालभोज)	- मेवाड़ का चार्ल्स मार्टल
- महाराणा कुम्भा (मेवाड़)	- अभिनव भरताचार्य
- महाराणा कुम्भा (मेवाड़)	- हिन्दु सुरताण
- राणा हम्मीर (मेवाड़)	- मेवाड़ का उद्धारक
- राणा सांगा (मेवाड़)	- हिन्दुपत
- राणा सांगा (मेवाड़)	- एक सैनिक का भग्नावशेष
- महाराणा प्रताप (मेवाड़)	- राणा कीका
- महाराणा प्रताप (मेवाड़)	- पाथल
- महाराणा प्रताप (मेवाड़)	- मेवाड़ केसरी
- महाराणा प्रताप (मेवाड़)	- हल्दीघाटी का शेर
- राव मालदेव (मारवाड़)	- हशमत वाला शासक
- उमादे भटियाणी (जैसलमेर)	- रूठी रानी
- उमोद भटियाणी (जैसलमेर)	- स्वाभिमानी रानी
- गुलाब राय	- जोधपुर की नूरजहाँ
- राव चन्द्रसेन (मारवाड़)	- मारवाड़ का प्रताप
- राव चन्द्रसेन (मारवाड़)	- प्रताप का अग्रगामी

- राव चन्द्रसेन (मारवाड़) – भूला हुआ नायक
- बांकीदास (जोधपुर) – मारवाड़ का बीरबल
- पृथ्वीराज राठौड़(बीकानेर) – पीथल
- पृथ्वीराज राठौड़ – डिंगल का होरेस
- मुहणो नैणसी – राजपूताने का अबुलफजल
- रायसिंह (बीकानेर) – राजपूताने का कर्ण
- राव लूणकरण (बीकानेर) – कलियुग का कर्ण
- महाराजा, गंगासिंह(बीकानेर) – आधुनिक भारत का भागीरथ
- वीर दुर्गादास राठौड़(जोधपुर) – राजस्थान का गेरिबाल्डी
- वीर दुर्गादास राठौड़(जोधपुर) – राठौड़ों का युलिसिज
- महाराजा सूरजमल (भरतपुर) – जाटों का प्लेटो (अफलातुन)
- सवाई जयसिंह (जयपुर) – ज्योतिष शासक
- कर्नल जेम्स टॉड (इंग्लैण्ड) – घोड़े वाले बाबा
- राजेन्द्र सिंह – पानी वाले बाबा
- कर्नल जेम्स टॉड (इंग्लैण्ड) – राजस्थान के इतिहास का पितामह
- मीरा बाई (डूँगरपुर) – राजस्थान की राधा
- गंवरी बाई (डूँगरपुर) – वांगड़ की मीरा
- अल्लाह जिल्लाहबाई – राजस्थान की मरू कोकिला
- अमरचंद में स्वतंत्रता संग्राम के भामाशाह – सेठ दामोदर दास राठी (पोकरण)
- मोतीलाल तेजावत (मेवाड़) – आदिवासियों का मसीहा
- विजयसिंह पथिक – राज. किसान आंदोलन के जनक।
- पं. झाबरमल शर्मा (झुंझुनूँ) – राजस्थान में पत्रकारिता का भीष्म पितामह
- रानी जयवंता बाई (प्रताप की माता) – राजस्थान की जीजा बाई
- दामोदर लाल व्यास (मालपुरा-टोंक) – राजस्थान का लौह पुरूष
- मोहनलाल सुखाड़िया (उदयपुर) – आधुनिक राजस्थान के निर्माता
- जयनारायण व्यास (जोधपुर) – राजस्थान का लोकनायक
- जयनारायण व्यास (जोधपुर) – शेर-ए-राजस्थान
- जयनारायण व्यास (जोधपुर) – धुन का धणी
- दूसरा जवाहर लाल नेहरू – पं. जुगल किशोर चतुर्वेदी(भरतपुर)
- बणी ठणी (किशनगढ़) – राजस्थान की मोनालिसा
- सूर्यमल्ल मिश्रण – वीर रसावतार
- गाँधीजी का पांचवा पुत्र – जमना लाल बजाज (सीकर)
- स्वयं को गुलाम नं. 4 कहने वाला – जमना लाल बजाज (सीकर)
- राजस्थान का कबीर – दादूदयाल (1544-1603) (अहमदाबाद)
- पंचायती राज के जनक – बलवंत राय मेहता (गुजरात)
- 'दा साहब' – हरि भाऊ उपाध्याय (अजमेर)
- बीकानेर में आजादी के जनक – पं. मघाराम वैद्य (बीकानेर)
- राजस्थान के गाँधी – गोकुल भाई भट्ट (बीकानेर)
- वांगड़ के गाँधी – भोगी लाल पण्ड्या (डूंगरपुर)
- बांगड़ के धणी – नरहड़ के पीर हजरत शक्कर बाबा
- राजस्थान का नृसिंह – भक्त कवि दुर्लभ भी (बांसवाड़ा)
- राजेन्द्र सिंह (मेरठ) – जोहड़ वाले बाबा
- रीमा दत्ता (अजमेर) – राजस्थान की जल परी
- अशोंक टांक – केमल मेन
- मंजु राजपाल (IAS) – आदिवासियों की बाईजी
- सीमा मिश्रा – राजस्थान की लता
- गोवर्धन लाल (बाबा) – भीलों का चितेरा
- परागान्द चोयल – भैंसों का चितेरा
- सौंभागमल गहलोत – नीड़ का चितेरा
- कैलाश सांखला – टाइगरमेंन
- किशन लाल सैनी – रेल बाबा
- जानकी लाल मांड – मंकी मेंन
- उदय शंकर – भारतीय बेले के जनक
- भैरोंसिंह शेखावत – बाबोसा